पंचम अध्याय
व्यंग्य साहित्यक मूल्यांकन

5.0 व्यंग्य साहित्य का मूल्यांकन :-

सूर्यबाला समकालीन हिंदी व्यंग्य साहित्य की सुविख्यात एवं बहुचर्चित लेखिका हैं । 'अजगर करे न चाकरी', 'धृतराष्ट्र टाइम्स', 'कुछ अदद जाहिलों के नाम' व्यंग्य संग्रहों में अनेक व्यंग्य रचनाएँ समाहित हैं । व्यंग्य रचना की शैली में न तो दिखावे का आक्रोश, न प्रहार या आघात की मानसिकता, न कोई अधिक शोरगुल, न ही आक्रमकता । लेकिन जो भी बात कही है वह भारी रंजकता के साथ पूरे भोलेपन के माध्यम से प्रस्तुत की है । उनकी मनःस्थिति के आधार पर शिथिल मुद्रा में ही सूर्यबाला तानों की प्रत्यंचा से तीर मारती दृष्टिगत होती है । इस प्रकार छोटे-छोटे संवाद हमारे चेहरे पर मुस्कान ले आते हैं और मनुष्य के मन को पुरा झिंझोड़ देते हैं ।

लेखिका ने अपने एक साक्षात्कार में स्वीकार किया है कि वह मूलरूप से एक कथाकार है । इसलिए उनके व्यंग्य सयास लेखन नहीं हैं परंतु वह उन्होंने समय, समाज और जीवन की सभी विसंगतियों से प्रसार होने वाली परिस्थितियों का चित्रण है । सूर्यबाला ने कम मात्रा में व्यंग्य की रचना की है परंतु जितने भी व्यंग्य उन्होंने लिखे हैं वे सहज-सरल और सशक्त और गुणवत्ता से इतने भरपूर हैं कि उनके समक्ष बड़े-बड़े व्यंग्यकार फीके पड़ जाएँ । इसलिए समकालीन व्यंग्यकारों में सूर्यबाला का स्थान महत्त्वपूर्ण है और इस वजह से व्यंग्य साहित्य समाज में उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है । समीक्षा संग्रह में लेखिका के कुल 29 व्यंग्य संग्रहित हैं । फ्लैप पर विख्यात व्यंग्यकार ज्ञान चतुर्वेदी की टिप्पणी और भूमिका प्रेम जन्मेजय की है । संग्रह के सभी व्यंग्य पढ़ने लायक हैं । उनकी सारी व्यंग्य रचनाएँ साहित्यिक मानकों पर खरी उतरती हैं । सूर्यबाला ने अपने सारे संग्रहों में व्यंग्य का चुनाव बहुत ही सोच-समझकर किया है । इन सारी

रचनाओं में सूर्यबाला को साहित्यिक और राजनीतिक समाज में फैली हुई विसंगतियों पर कटाक्ष करना अधिक प्रिय है । विसंगतियों को उजागर करने का काम इस त्वरित और तत्कालिक प्रतिक्रिया से उपजे व्यंग्य को सूर्यबाला ने बेशक 'अचानक उपज' या अनायास की 'उपलब्धि' कहा है लेकिन जीवन की विसंगतियों और विद्रूप से अनवरत संघर्ष करती, लड़ती स्त्री लेखिका को अपनी रचनाओं में संजीदगी और संवेदनशीलता तक रोक रखना इतना आसान काम नहीं है । लेखिका को उसमें रचनात्मकता, संप्रेषण और नयी संभावनाएँ खोजते रहना पड़ता है ।

सूर्यबाला ने स्वयं कहा है कि "मेरे लेखन में व्यंग्य ने बेहद अहम भूमिका निभायी है , विधा के रूप में भी और शैली के रूप में भी ।" व्यंग्य की इस विधा में सूर्यबाला की अब तक आधे दर्जन से भी अधिक कृतियाँ हमारे समक्ष आ चुकी हैं जिसमें 'धृतराष्ट्र टाइम्स', 'देश सेवा के अखाड़े में', 'भगवान ने कहा था', 'पत्नी और पुरस्कार', 'मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ', 'प्रतिनिधि व्यंग्य रचनाएँ', 'यह व्यंग्य कौ पंथ'। व्यंग्य की सबसे बड़ी खुशी यह होती है कि इसमें रचनाकार स्वयं अपने मन में छिपी बातें, व्यक्तित्व, कर्म आदि को स्वयं कैसे निशाने पर लेते हैं । अपनी आदतों, प्रवृत्तियों, दुर्बलताओं पर कोई कितना परिहास कर सकता है । परंतु एक व्यंग्य रचनाकार को इन सब बातों से परे होकर यह काम करना पड़ता है और यह सब एक स्त्री लेखिका के लिए अतना आसान काम नहीं है । क्योंकि एक स्त्री को हमारे समाज में पग-पग पर उसकी मर्यादाओं और सीमाओं का ज्ञान करवाया जाता है और उसका परिहास किया जाता है ।

सूर्यबाला के व्यंग्य लेखन के बारे में जाने-माने व्यंग्यकार ज्ञान चतुर्वेदी की फ्लैप टिप्पणी मुझे बेहद सटीक लगती है कि "सूर्यबाला का व्यंग्य उनका अपना है और इस कदर अपना है कि उसमें महान पूर्वजों की शैली या कहन की छाया भी नहीं है। वे अपना कद तथा अपनी छाया स्वयं बनाती हैं, जो उनके व्यंग्य को पाठक से सीधे जोड़ देती है । "

हम सूर्यबाला की व्यंग्य रचनाओं का व्यंग्य के तत्त्वों को आधारस्तंभ बनाकर उनका मूल्यांकन करने का प्रयत्न करेंगे । उनके व्यंग्य में विसंगतियों की उपस्थिति, उनकी प्रगतिशील एवं सकारात्मक सोच, उनके द्वारा की गई नैतिक मूल्यों की रक्षा, उनका गहन चिंतन, पात्रों का चयन, व्यक्ति एवं समाज का पतन, भाषा शैली, आलोचना, बौद्धिकता आति को ध्यान में रखते हुए सूर्यबाला द्वारा रचित व्यंग्यों का मूल्यांकन करना मेरा पूर्ण प्रयास रहेगा ।

सूर्यबाला की व्यंग्य रचनाओं को हम भिन्न-भिन्न विभागों में बाँटकर मूल्यांकन करेंगे जिसमें (1) साहित्यिक व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन (2) राजनीतिक व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन (3) सामाजिक विसंगतियों पर आधारित व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन (4) नारी जीवन की समस्याओं पर आधारित व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन करने का मेरा प्रयास रहेगा।

5.1 साहित्यिक व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन :

व्यंग्य साहित्य की एक विधा है, इसको ध्यान में रखते हुए व्यंग्यकार जीवन की अनेक विसंगतियों, पाखंड, ढोंग को समाज के सामने उजागर करता है और उस पर अपनी व्यंग्य शैली में टिप्पणी करके पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है ।

हमारे सामने ऐसी कितनी ही स्थितियाँ बनती हैं जिसको हम देखते हैं, समझते हैं, महसूस करते हैं और ऐसी परिस्थितियों में हम अपने जीवन की आदत बना लेते हैं और कोई विरोध प्रकट नहीं करते । परंतु वह एक लेखक ही है जो ऐसी विसंगतियों को व्यंग्य के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत करने का प्रयास करता है । दूसरे शब्दों में कहें तो व्यंग्य समाज के भीतर घटने वाली विसंगतियों का ही व्यंग्यात्मक शैली में चित्रण होता है । जिसके माध्यम से लेखक किसी पर सीधा आक्षेप या आरोप नहीं करता है परंतु परोक्ष रुप से अपनी बात को प्रकट करता है ।

सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में अनेक विसंगतियों को दृष्टिगत किया है जिसमें से सूर्यबाला ने साहित्यिक क्षेत्र में घटने वाली विसंगतियों को पाठकों के

सामने बड़े ही सीधे ढंग से व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से साहित्यिक जगत में घट रही विसंगतियों को उजागर करते हुए समाज के प्रति चेतनाशील बनने को प्रेरित किया है ।

सूर्यबाला ने अपनी साहित्यिक व्यंग्य रचना 'अगली सदी का शोधपत्र' में हिंदी साहित्य में हिंदी भाषा का जो मान-सम्मान है तथा पूरे हिन्दुस्तान में हिंदी बाषा के प्रति यहाँ के सामान्य मानस के मन में उसकी छवि कैसी है उसको दर्शाया है । हिंदी भाषा के लिए हमारे देश में हिंदी दिवस मनाने के लिए एक दिन निश्चित किया गया है, जिसमें हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हप्ता या पखवाड़ा घोषित किया जाता है । हिंदी को सम्मानित करवाया जाता है । हिंदी के साथ में प्रेम से पेश आते हैं उस दिन लोग और हर्षोल्लास से भाषा बोली जाती है । हिंदी का संपूर्ण सेल भव्य चकाचौंध सम जगमगाता है परंतु यह भव्य सेल मात्र एक दिन का ही होता है, बीक के दिन इसे खर्च करने पर आप पर जुर्माना लग सकता है । हिंदी केवल वातानुकूलित ऑफिसों में एयरटाइट फाईलों में बंद रखा जाता है क्योंकि सारे स्केड्युल अंग्रेजी में होते हैं । कुछ विशेष प्रकार के स्केड्युल ही हिंदी में होते हैं ।

इस व्यंग्य रचना में सूर्यबाला ने हिंदी भाषा की हमारे ही हिन्दुस्तान में हो रही दुर्गति को उजागर किया है । उसकी कैसे उपेक्षा की जाती है और उसके मान-सम्मान को ठेस पहुँचाई जाती है जबकि अंग्रेजी भाषा को हमारे देश में मोरपंख की भाँति सिरमौर बना दिया जाता है । मेरी दृष्टि में तो यही बात हो गई 'घर की मुर्गी दाल बराबर वाली बात' हो गई । हिंदी को सिर्फ राष्ट्रभाषा, राजभाषा का सम्मान मात्र दिया गया है । उसको कई अधिकार नहीं है कि वह अपनी आवाज़ को बुलंद करे । हिंदी केवल नाम मात्र की ही राष्ट्रभाषा रह गई है ।

इस व्यंग्य रचना में हास्यात्मक शैली का प्रयोग करते हुए साहित्यिक समाज पर धारदार प्रहार किया गया है । अगर इस रचना की भाषा देखें तो वह व्यंग्यात्मक शैली में तथा कहीं-कहीं पर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है ।

शोधछात्रों की समस्याओं को भी ध्यान में रखा गया है । शब्दों का प्रयोग सीधे-सीधे न कहकर हास्य का निर्माण करते हुए कई अन्य समस्याओं पर भी दृष्टि की है जिसमें देश में होने वाले घोटाले, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि का उल्लेख देखने को मिलता है । कई लेखकों एवं साहित्यकारों का भी उल्लेख किया गया है जिसमें कबीर, सूरदास, तुलसीदास, भारतेन्दु, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, रत्नाकर आदि का उल्लेख मिलता है। इस व्यंग्य रचना के माध्यम से साहित्य में हिंदी के स्थान के विषय में सूर्यबाला ने व्यंग्य शैली में करारा प्रहार किया है ।

5.2 एक पुरस्कार यात्रा :

सूर्यबाला ने 'एक पुरस्कार यात्रा' व्यंग्य रचना में एक ऐसे लेखक का उव्व्लेख किया है जो अपना पूरा जीवन साहित्य को समर्पित करता है परंतु उसके जीवन के अंतिम समय तक उसे कोई भी पुरस्कार मिलता नहीं । उसके योगदान को महत्त्व नहीं मिलता । यहाँ पर सूर्यबाला ने पुरस्कार समितियों द्वारा कैसे वयोवृद्ध लेखकों की उपेक्षा की जाती है इस समस्या पर अपने अलग अंदाज़ में व्यंग्य किया है । सूर्यबाला ने इस व्यंग्य रचना के माध्यम से पुरस्कार समितियों में चल रही उनकी मनमानी तथा साहित्य के माध्यम से कैसे प्रतिष्ठा स्थापित की जाती है उसको उजागर किया है ।

इस व्यंग्य रचना में एक वयोवृद्ध साहित्यकार को मरणासन्न अवस्था में पुरस्कार देने के लिए चुना गया है ताकि पुरस्कार समिति प्रसिद्धि प्राप्त कर सके। यहाँ पर अस्पताल में पड़े साहित्यकार का सम्मान किया जा रहा है । उन्हें पुरस्कार समिति के सदस्य शॉल, श्रीफल एवं गेंदे के फूलों की माला समेत श्रद्धा से उन्हें घेरे खड़े हो जाते हैं और उनसे सुसंवाद करने के लिए प्रार्थना की जाती है। समिति के कुछ सदस्य तो उनके कानों में भी कहते हैं कि कुछ बात करें या दो शब्द ही बोल दें । उनको लगता है कि शायद उनकी यह बात सुनकर ही उठ जाएँ कि उनको यह लोग पुरस्कृत करने आए हैं।

सूर्यबाला ने इस व्यंग्य में पुरस्कार समितियों के द्वारा वयोवृद्धों की उपेक्षा करने पर जोरदार प्रहार किया है । सब जानते हैं कि वयोवृद्ध साहित्यकार कोमा में चला गया है परंतु भावनाहीन पुरस्कार समिति के लोग अपने ही मतलब की रोटियाँ सेंकना चाहते हैं और बिनती करते हैं कि केवल दस-पाँच मिनट के लिए ही लेखक उठ जाएँ तो उनका काम बन जाएगा । यह हमारे साहित्य के क्षेत्र की सबसे बड़ी त्रुटि है कि पुरस्कार समितियाँ साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करने वाले लेखकों को भूल जाती हैं, उनकी उपेक्षा करने में कोई कमी नहीं रखतीं ।

सूर्यबाला ने इस व्यंग्य में हास्यात्मस व्यंग्य का सहारा लिया है और भाषा को आत्यंतिक प्रभावी बनाने के लिए दोहात्मक शैली का प्रयोग किया है । भाषा में कटुता के साथ-साथ टाँट भी शामिल है जो पाठकों को गहरा झटका देते हैं और उन्हें विचाराधीन कर देते हैं ।

5.3 हिन्दी साहित्य की पुरस्कार परम्परा :

प्रस्तुत व्यंग्य रचना में सूर्यबाला साहित्य के लेखकों को दो श्रेणियों में विभाजित करती हैं जिसमें एक ऐसे लेखकों का समावेश होता है जो पुरस्कृत हैं और दूसरे वे लेखक हैं जो अपुरस्कृत हैं और अपुरस्कृत लेखक हैं वे गालियाँ देते हैं ।

लेखिका ने अपुरस्कृत लेखकों को भी दो श्रेणियों में विभाजित किया है । एक वे हैं जो पुरस्कार पर टुटते हुए लेखकों को देखकर दुःखी होते हैं और दूसरे वे लेखक जो यह सोचकर दुःखी होते हैं कि काश! खतरा उठाने का यह मौका उन्हें मिला होता । पुरस्कारों में साहित्यकारों की श्रेष्ठता और महानता दिखाने से ज्यादा अपने पुरस्कारों की श्रेष्ठता दिखाने के लिए देते हैं । पुरस्कार प्राप्त लेखक अगर दिवंगत है तो उसके मित्र को तुरंत पुरस्कार आवंटित किया जाता है । इस व्यंग्य रचना के माध्यम से लेखिका ने भारत में साहित्य में दिया जाने वाले सम्मान

और पुरस्कारों में चली आ रही धांधली को खुलेआम व्यंग्य के माध्यम से लताड़ा है । व्यंग्यात्मक रचना में देश की समस्याओं को भी दृष्टिगत किया है जैसे भुखमरी, गरीबी को केन्द्र स्थान पर रखा है ।

हिन्दी साहित्य में पुरस्कारों की अपनी एक महत्ता है । "पुरस्कार परंपरा का अपना एक अलग महत्त्व है । इस परंपरा से लेखक, संपादक, पत्रकारों के बीच परस्पर भाईचारे की भावना को बढ़ाया जाता है"[1] और इस तरह साहित्य का मुख्य बनाने का कार्य करते हैं ।

सूर्यबाला ने पुरस्कार परंपरा का व्यंग्यात्मक शैली में वर्णन किया है । हिन्दी साहित्य में पुरस्कारों के वितरण में जो विसंगतियाँ होती हैं उसका पुरजोर विरोध परोक्ष रूप से सूर्यबाला ने प्रकट किया है । इस व्यंग्य की भाषा थोड़ी टेढ़ी है जो तुरंत पाठकों के मन में प्रभावी भाव प्रकट करती हैं । हास्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है ।

5.4 हिन्दी साहित्य और पचास के हुए लेखक:

प्रस्तुत व्यंग्य रचना में सूर्यबाला ने हिन्दी साहित्य में पचास की आयु पार कर जाने वाले लेखकों की परिस्थिति का वर्णन वर्णनात्मक शैली में व्यंग्यात्मक शैली का मिश्रण करके लिखा है । जो लेखक पचास की उम्र को पार कर गये हैं उनकी आज साहित्य में क्या दशा है उस पर व्यंग्य करते हुए उनकी मानसिक अवस्था का भी चित्रण किया है ।

हर लेखक पचास के हुए लेखक के कान में कुछ फुसफुसाता है और कहता है - "वाणी-वितान में धमाकेदार जलसे की योजना है। आ रहे हैं न आप?" [2] ऐसा सवाल किया जाता है । उसेक वक्त यह सब कुछ नहीं हुआ था क्योंकि लेखक ने अपनी उम्र को सबसे छुपाकर रखा था और साहित्य में कोई पचास का नहीं हो पाया है । कोई लेखक अगर परंपरा के अनुसार नहीं चलता तो कायदे से फूल-फल नहीं पाया । पचास का होता देख अन्य लेखक विषाद में डूब जाएँगे ।

"गवादी लेखक गुढार्थ समझे बिना प्रसन्नचित चला जाता है ।"[3] "प्रतिरोध में जो शामिल थे उनका कहना था कि वह पचास के होने वाले लेखकों से तंग आ चुके हैं । वे कहते हैं- आखिर कब तक झेलें इन लेखकों को?"[4] देखते-देखते ये लोग साहित्य की अस्मिता पर अपने आधिपत्य की घोषणा करने से भी बाज़ नहीं आते । शेष साहित्यकार भी एक-दूसरे से सहमत होते नज़र आये और कहने लगे- हम अपनी अस्मिता को इन पचास के हुए लेखकों के हत्थे नहीं चढ़ने देंगे ।

लेखकों के कहने पर दलित और स्त्री-विमर्श की पर किसी गंभीरता से बात होनी चाहिए। विश्वविद्यालयों में शोधों और पत्रिकाओं में परिचर्चा चलानी चाहिए । स्त्री-विमर्श के लिए तीस-पैंतीस की उम्र काफी है । इस व्यंग्यात्मक रचना में पचास के हुए लेखकों के प्रति हिन्दी साहित्य कैसी दृष्टि रखता है तथा उसका कितना सत्कार या विरोध होता है उसे व्यंग्यात्मक शैली में सूर्यबाला ने बड़ी गुढ़ भाषा में चित्रित किया है । मेरी दृष्टि से भाषा कहीं कहीं पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत होने पर यह एक साहित्यिक समस्या पर व्यंग्य प्रस्तुत किया है । व्यंग्यात्मक शैली को बड़े सरल शब्दों में प्रस्तुत किया है ।

5.5 साठ के हुए लेखक :

सूर्यबाला की इस रचना में 'पचास के हुए लेखक' के बाद साठ के हुए लेखकों की चर्चा-विचारणा की जा रही है । साठ के हुए लेखक अपने आपको सुप्रसिद्ध, जाने-माने जैसे स्वर्णाक्षरों में अंकित करा रहे हैं । वे अपनी भाषा शैली, कथोपकथन को पहले की अपेक्षा अधिक पात्रानुकूल बताते हैं । साठ का हुआ रचनाकार अधिक विनम्र हो गया है । "वह पचास के हुए लेखकों की भाँति बिन बुलाए किसी सभा या संमेलनों में नहीं जाता बल्कि स्वयं को निमंत्रित करवाने का जुगाड़ करता है ।"[5] हर लेखक दूसरे के पुस्तकों का अनावरण करते नज़र आता है । ऐसा लगता है पुस्तकें पढ़ने के लिए नहीं परंतु अनावरण करवाने के लिए लिखी जा रही हैं । वह पूरी पुस्तक पढ़ने का नहीं परंतु किसी पुस्तक का

अनावरण नहीं किया इस बात से अधिक चिंतित रहता है । सूर्यबाला ने इस व्यंग्य रचना में जैसे-जैसे लेखकों की उम्र बढ़ती जाती है उनको साहित्य जगत में और अधिक मान-सम्मान, प्रतिष्ठा की लालसा जाग जाती है । वे साहित्य के हर क्षेत्र में अपने आप को एक महत्त्वपूर्ण स्थान पर देखते हैं तथा अपना सम्मान स्वयं ही करवाते हैं । यहाँ पर सूर्यबाला ने हास्य निर्मित करते हुए लेखकों के मन के भावों को प्रकट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है । इस व्यंग्य रचना में सूर्यबाला ने वर्णनात्मक शैली के साथ-साथ मन के भावपक्ष को उजागर किया है और पूर्णरूप से स्पष्टीकरण भी किया है । लेखकों की साठ की होनेवाली व्याकूलता को व्यंग्यात्मक शैली में रेखांकित किया है ।

5.6 पुरस्कार मेले की उत्तर-आधुनिकता:

इस व्यंग्य रचना में सूर्यबाला पुरस्कार से संबंधित जो घटना घटित होती है उसको अपनी व्यंग्यात्मक शैली में उजागर करती हुई दृष्टिगत होती हैं ।

शहर में पहली बार चौवन वर्षों के बाद ऐसी घटना घटी है जिसको देखकर समुचा हिंदी संसार दंग रह गया क्योंकि वह था पुस्तकों का मेला जहाँ पर आयोजकों के द्वारा आयोजन किया गया था जिसके कारण उस मेले में प्रकाशकों की अफरा-तफरी मची हुई थी । पुस्तकों के स्टॉलों पर लेखकों का घमासान था, सोचा था अलग-अलग विधा के अलग-अलग प्रकाशकों के पुस्तकों के स्टॉल लगाए जाते । वहाँ पर अपने-अपेन हिसाब से स्वयं ही पुरस्कारों का चयन कर लें और खरीद लें । वैसे भी पुरस्कारों को लेकर ढेरों आरोप लगाए जाते हैं । उसके प्रति आपत्तियाँ जता-जताकर नाक में दम करके रखा है जिसमें दोनों तरफ पुरस्कार स्वीकार करने वाले और देने वाले का जीवन दुभर हो गया है । पुरस्कारों की घोषणा होने के बाद लेखकों की रही सही इज्जत भी मिट्टी में मिल जाती है । सूर्यबाला ने व्यंग्य साहित्य में लेखकों को दिए जाने वाले पुरस्कारों को लेकर उसकी व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े किए हैं तथा उस क्षेत्र में कैसी-कैसी

मानसिकता वाले लेखक हैं इसका भी परिचय करवाया है । सूर्यबाला ने पुस्तक प्रकाशकों, पुरस्कार प्रदान करने वाले सभी को अपनी चपेट में लिया है तथा उन पर अपने व्यंग्य के बाण चलाए हैं । सूर्यबाला ने वर्णनात्मक शैली में व्यंग्य का मिश्रण करते हुए इस रचना का निर्माण किया है । इस व्यंग्य की भाषा प्रभावात्मक है जो सीधे पाठकों के मन पर चोट करते हुए उन्हें विचाराधीन कर देती है ।

5.7 कोटा नाम का शहर :

सूर्यबाला ने जब से हिन्दी साहित्य जगत में पदार्पण किया है उन्होंने शुरुआत में कहानी, उपन्यास लिखना प्रारंभ किया था उसके एक दशक बाद के कोटा शहर के लोगों ने उन्हें पढ़ना प्रारंभ किया था । इस शहर के पाठक हमेशा लेखिका को पत्र भेजते रहते थे । लेखन भले ही अस्वस्थ वृत्ति का शिकार हुआ हो, परंतु स्त्री-विमर्श की से टेक ऑफ करता है । यह शहर लेखिका पर दूर से ही अपनी पैनी दृष्टि बनाए हुए है । उन पर बारीकी से नज़र रखे हुए है । "नब्ज़ नहीं वरन् पूरे हेल्थ का बुलेटिन हैं इस शहर के पत्र ।"[6] लेखिका के संदर्भ में, लेखिका विदेश जाकर आ गई हैं लेकिन फिर भी कोटा शहर से लेखिका के लिए कोटा शहर के पाठक अपने शब्दों से उनके साथ व्यवहार करते दृष्टिगत होते हैं और उनसे सवाल करते हैं- "विश्वास है, इस बार तो आप आएँगी ही... मैं क्या ध्वन्यार्थ नहीं समझती, आएँगी नहीं तो जाएँगी कहां!"[7] यह शहर आये दिन लेखिका को निमंत्रण भेजता रहता है । हमारी संस्था आपको सम्मानित करना चाहती है । लेखिका भी क्या करे । उनके पति के कहने भर से अपनी इज्जत बचाने के लिए लेखिका भी इस शहर में पहुँच जाती है । लेखिका ने कोटा शहर की तुलना इतिहास के शहर पाटलिपुत्र से की है । कोटा हिन्दुस्तान के बाहर नहीं है । यहाँ पर बिजली पानी चौबीस घंटे उपलब्ध है । शिक्षा, साहित्य एवं समृद्धि के क्षेत्र में यह शहर भारत के अन्य शहरों को भी कड़ी टक्कर देता है । बहुत सारे बुद्धिमान

लोग इस शहर में इकट्ठा हो गए हैं । इस व्यंग्य रचना में शिक्षा के क्षेत्र में प्रसिद्ध शहर कोटा का उल्लेख करते हुए अपने आप को भी लेखिका ने व्यंग्य की दृष्टि से इंगित किया है । कम ही ऐसे लेखक होते हैं जो स्वयं पर व्यंग्य करते हैं । ऐसा करने के लिए भी एक लेखक में सब्र एवं हिम्मत की आवश्यकता होती है । व्यंग्य की भाषा अत्यधिक प्रभावशाली है, व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करते हुए स्वयं को कटघरे में खड़ा किया है । शिक्षा, तज्ञ आदि पर भी व्यंग्य के बाण चलाए हैं । वर्णनात्मक शैली, तुलनात्मक शैली का उपयोग किया है । कहीं-कहीं पर संवाद शैली भी प्रयुक्त हुई है । लेखन एवं शिक्षा के क्षेत्र में त्रुटियों को उजागर किया है।

5.8 मेरे व्यंग्य लिखने के कारणः

इस व्यंग्य रचना में लेखिका ने अपने व्यंग्य लिखने के कारणों को व्यंग्य शैली के माध्यम से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है । लेखिका कहती हैं - "जो कुछ नहीं लिखा जा रहा उस पर बहस चर्चा की जाती है । जो लिखा जा रहा है उस पर कोई बहस नहीं करता।" "हिन्दी की एक प्रतिष्ठित पत्रिका यह बात लेखिका से जानने के लिए उत्सुक है कि लेखिका क्यों लिखती हैं ?"[8] क्या यह धमकी या फतवा जारी किया गया है न लिखने के लिए?

पत्रिका वाले लेखिका से सवाल करते हैं कि "आप व्यंग्य क्यों लिखती हैं हम यह जानना चाहते हैं ।" वे कहती हैं कि शायद लोगों को यह भनक लग गई है कि लेखिका अब व्यंग्य भी करने लगी है । लेखिका भी अपनी व्यंग्यात्मक शैली भरे अंदाज में जवाब देते हुए लिखती है कि व्यंग्य लिखने का पहला कारण व्यंग्य लिखने का पागल कुत्ता है । जब-जब यह पागल कुत्ता उन्हें काटता है तब-तब लेखिका को व्यंग्य लिखने का मन करता है और इसकी वजह से ही लेखिका व्यंग्य लिखने बैठ जाती हैं । लिखने का दूसरा कारण बताते हुए लेखिका लिखती हैं कि वह गालियाँ देना चाहती हैं जो व्यंग्य को माध्यम बनाकर आप आराम से किसी को भी कुछ भी कह सकते हैं । व्यंग्य करने का यह एक फायदा है कि

अपने मन की बात को सीधे-सीधे न कहकर परोक्ष रूप से हास्यात्मक शैली या अंग्रेजी में कहें तो टॉंटिंग का सहारा लेते हुए सामने वाले को अपनी बात बता सकते हैं । इस शैली से लाभ यह है कि साँप भी मर जाता है, और लाठी भी नहीं टूटती । अर्थात् जिस तक हम अपनी बात रखना चाहते हैं वह उस तक पहुँच ही जाती है । व्यंग्य के माध्यम से आप विरोध की भावना प्रकट कर सकते हैं । व्यंग्य लिखने का कारण हिंदी के समीक्षक भी हैं, स्वनामधन्य संपादक भी हैं जो रचनाएँ तो बिना पढ़े ताबड़तोड़ छाप देते हैं जबकि अन्य लेखकों की रचनाओं को लौटा दिया जाता है । व्यंग्यात्मक शैली का उपयोग किया है । संवादात्मक शैली, हास्यात्मक शैली का भी प्रयोग किया है । भाषा सरल सहज होने के बजाय गूढ़ एवं रहस्यात्मक नज़र आती है । मेरी दृष्टि से फिर भी सूर्यबाला ने कृति के साथ न्यायसंगतता की है ।

5.9 साहित्य में कार और ड्राइवर का योगदान:

इस व्यंग्य में सूर्यबाला ने साहित्य के क्षेत्र की चुनौतियों को उजागर किया है । उनमें से एक समस्या है साहित्यकारों को उनके आमंत्रित सेमिनारों तक पहुँचाना, क्योंकि साहित्यिक सेमिनारों में वे समय पर नहीं पहुँच पाते हैं । उनको समय पर पहुँचाने के लिए सेमिनारों के आयोजक कार ड्राइवर सहित बंदोबस्त करते हैं क्योंकि अगर साहित्यकार ही साहित्य के सेमिनारों में नहीं पहुँचता है तो सेमिनारों की गुणवत्ता पर इसका प्रभाव पड़ता है और इसी आधार पर सेमिनार का परिक्षण हो जाता है और इन सारी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही सेमिनारों को उत्तम एवं मध्यम का टैग प्रदान किया जाता है ।

साहित्य जगत में जितने भी सेमिनारों का आयोजन किया जाता है उनमें ड्राइवर की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि एक ड्राइवर ही ऐसा शख्स है जो सेमिनार में आने वाले लेखकों को सारी समस्याओं से बचाता है और सेमिनार की सफलता का सारा श्रेय ड्राइवर को दिया जाता है । लेखकों को गेस्ट हाउसों, डाक

बंगलो और फाइव स्टार होटलों से सेमिनार स्थलों पर ड्राइवरों की सहायता से ही अनलोड किया जाएगा और साहित्यकारों को सेमिनारों में पहुँचाते-पहुँचाते आज कितने ड्राइवर साहित्यकार बन चुके हैं । कुछ साहित्यकार, सुरक्षित लेखक, यात्रा की गारंटी के रूप में सीधा राजधानी एक्स्प्रेस का बर्थ आरक्षित कर लेते हैं । प्रस्तुत व्यंग्य में लेखकों की उनके स्थलों तक पहुँचने की समस्या को बताया है । इस व्यंग्य रचना में साहित्य द्वारा आयोजित सेमिनारों पर प्रश्नचिह्न लगाये गये हैं । लेखिका ने भी व्यंग्य परंपरा का पालन इस व्यंग्य रचना में किया है । अपने मन के भावों को भी व्यंग्य के स्थान को निश्चित नहीं रही । कहीं-कहीं पर हास्यनिर्मित होता है । भाषा थोड़ी मेरी दृष्टि से कठिन है जो उच्च गुणवत्ता के पाठकों को समझ आयेगी परंतु सामान्य पाठक को समझाना मुश्किल हो जाएगा । भाषा में लेखिका ने कहावतों, फिल्मी गीतों का प्रयोग भी किया है । गीत ..ओ गाड़ीवाले... भी उल्लेखित है ।

5.10 समकालीन लेखकों को पत्रोत्तर:

प्रस्तुत व्यंग्य रचना के माध्यम से लेखिका समकालीन लेखकों को व्यंग्य के माध्यम से लताड़ती देखी जा सकती हैं । एक समकालीन लेखक ने पत्र लिखा है क्योंकि उस पत्र में उस लेखक ने लेखिका को एक उच्च दर्जेवाली लेखिका क्यों कहा है क्योंकि साहित्य के क्षेत्र में ज्यादातर एक लेखक दूसरे लेखक की आलोचना करता ही पाया जाता है । यह बात लेखिका के मन को थोड़ा कचोटती है और वह सोचती हैं कि ऐसे कैसे हो गया? वह लेखक सही में हिंदी का लेखक है या नहीं इस बात पर लेखिका अपनी शंका प्रकट करती हैं । लेखिका को इस बात का संदेह बना हुआ है क्योंकि हिंदी साहित्य जगत में हर लेखक अपने आपको एक उच्च कोटि का लेखक मानता है । लेखिका उस लेखक पर व्यंग्य करते हुए संवाद करती है कि "तुम तो ऐसे नहीं हो ।" यह बात हिन्दी का हर लेखक अपने जहन में रखता है कि हिंदी सर्वश्रेष्ठ लेखक कौन है? तो वह लेखक

जवाब में स्वयं का ही नाम सुनना पसंद करता है । लेखिका ऐसा पत्र पाकर शंका करती है कहीं यह पत्र उन्हें किसी अकादमी अध्यक्ष, संस्थान सचिव ने तो नहीं लिखा है । क्योंकि लेखक के विषय में ऐसी कल्पना करना थोड़ा असंभव लगता है।

इस व्यंग्य में लेखिका का यह लेखक कई वर्षों से प्रशंसक रहा है । लेखिका कहती हैं कि "प्रशंसा तो चार-पाँच पंचों के बीच होनी चाहिए जिससे प्रमाणित हो जाता है । रचना छपवाने के बाद भी लेखिका को उस रचना के पैसे नहीं दिये जाते बल्कि यह उत्तर मिलता है कि पत्रिका घाटे में जा रही है और सबकुछ अवेतनिक ही है ।"[9] लेखिका की आँखों में आँसू आ जाते हैं कि "ऐसा है तो बताते । मैं रचना के साथ नाश्ता-खाना भी भिजवा देती।"[10]

सूर्यबाला ने यहाँ पर स्वयं को भी इस व्यंग्य के अखाड़े में उतारा है । व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है । समकालीन लेखकों की मानसिकता को उदाहरणों के माध्यम से दर्शाया है । प्रतिस्पर्धा के इस जमाने में भी एक-दूसरे का सम्मान कैसे किया जाता है इस भाव को भी व्यंग्यात्मक रूप से प्रकट किया है । भाषा को अधिक प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया है ।

5.11 मेरी आनेवाली फ़िल्म:

सूर्यबाला व्यंग्य के संदर्भ में कहती हैं कि पिछले दो दशकों से लेखिका उपन्यास, व्यंग्य लिखने के चक्कर में स्त्री चेतना या नारी स्वातंत्र्य जैसे विषयों में लिख नहीं पाई है क्योंकि सूर्यबाला कहती है कि वह आज तक सूर्यबाला स्त्रियों के विषय में ऐसा नहीं लिख पाई है जिसके आधार पर, या पात्र के आधार पर कोई फिल्म बनी हो । जो साहित्य में अच्छा नाम कमाता है वह अपने स्त्री-विषयक पात्र के बारे में बताते हुए कहती है कि उनकी स्त्री विषयक फिल्म का पात्र एकदम बोल्ड, दबंग किस्म का होगा । सूर्यबाला इस व्यंग्य रचना में हास्य निर्माण करते हुए लिखती हैं कि फिल्म के प्रथम सीन (दृश्य) में ही वह स्त्री शक्ति का परिचय

देने के लिए "पति को पत्नी से पिटता हुआ दिखा देगी"[11] अर्थात् फिल्म की शुरुआत का सीन ही दबंग (स्त्री) स्टाईल में हो जाएगा । सूर्यबाला अपने स्त्री पात्रों में एक आत्मविश्वास पैदा करना चाहती हैं । यहाँ आज की अबला नारी की तरह पति अपनी पत्नी को प्रताड़ित नहीं करेगा । जबकि इसके विपरित इसमें पत्नी अपने पति को प्रताड़ित करते नज़र आयेगी और हालातों से बेहाल पति अपनी पत्नी के चरणों में पड़ा रहेगा और उससे वहाँ रहने की विनंती या गुजारिश करेगा। इस व्यंग्य रचना में समाज में स्त्री-पुरुष में जो भेद है उस समस्या को व्यंग्य शैली के माध्यम से विरोध किया है । फिल्मी दुनिया का जीवन एवं साहित्य क्षेत्र दोनों में क्या भिन्नता है यह दर्शाया है । दोनों के अंतर को रेखांकित किया है ।

भाषा तो इस व्यंग्य साहित्य की विरोधात्मक है, कहीं-कहीं पर अपनी भाषा से व्यंग्य रचना में प्राण भर दिए हैं । कहीं-कहीं ऐसे संवाद भी हैं जो हास्य निर्मित करते हैं । स्त्री संवेदनाओं को रेखांकित किया है । समाज में स्त्री की स्थिति बदलने को लेकर व्यंग्य शैली का उपयोग किया है ।

सब्र का अंत व्यंग्य की शुरुआत:

लेखिका लिखती हैं जब "व्यंग्य ही नहीं तो व्यंग्य का मनोविज्ञान कैसा"[12] क्योंकि व्यंग्य हमेशा झुठ के खिलाफ होता है । समझकर मददगार बनता है । लेखिका की पतली बहन अपनी माँ से कहती है कि अभी मेरे पास से एक लाइन गुनगुनाते हुए गुजरी है, चिढ़ा-चिढ़ाकर जीना दुश्वार कर दिया है । उनकी बहन व्यंग्य करती है कि "नागिन है, नागिन है, डस ले तो ज़हर ना जाए ।"[13] बस तब से लेखिका के सिर पर जुनून सवार हो गया कि व्यंग्य एक गाली जैसा होता है । यह किसी व्यक्ति, समस्या या समाज का स्तुतिगान नहीं है । यह उस समस्त व्यक्ति या घटना के संबंध में किया गया कटाक्ष होता है । यह कटाक्ष शब्दों का सुरक्षा वलय है । व्यंग्य का आलोचनाशास्त्र पढ़कर व्यंग्यकार नहीं बना जा सकता । "व्यंग्यकार तो पैदाइशी होते हैं।"[14] जहाँ से व्यंग्य की शुरुआत हुई, उसके संदर्भ

में लिखा गया है कि जब व्यक्ति का सब्र खत्म हो जाता है तो उसके मन में जो भाव आता है, पर उन भावों को सीधे-सीधे सरल भाषा में व्यक्त ना करके व्यंग्य शैली में व्यक्त करता है, विरोध प्रकट करता है ।

लेखिका ने अपने व्यंग्य लेखन की शुरुआत की बात की है । भाषा में सहज एवं सरल भाव है ।

चोटी पर न पहुँचे हुए लोग :

इस व्यंग्य रचना में लेखिका व्यंग्य करते हुए कह रही है कि "अभी तक वह पहाड़ पर नहीं चढ़ी है" अर्थात् अभी तक तो साहित्य में उनको जो दर्जा मिलना चाहिए वो नहीं मिला है । मेरी दृष्टि से पहाड़ पर चढ़ने की उनकी दिली ख्वाहिश है । वे अपने लेखन में अभी तक अपेक्षित ऊँचाई पर नहीं पहुँच पाई हैं क्योंकि उन्होंने कोई फिसलन या खतरा उठाया नहीं है । साहित्य के क्षेत्र में जो जोखिम होते हैं वह अभी तक लेखिका नहीं उठा पाई हैं । इस कारण लेखिका पर साहित्यिक प्रदूषण की जिम्मेदारी डाल दी जाती है । लेखिका साहित्य के क्षेत्र में कथाकारिता की चोटी पर पहुँचने की बात करती हैं । साहित्य के क्षेत्र में लेखकों को अपना नाम चोटी पर पहुँचाने के लिए, उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए बहुत ही कश्मकश करनी पड़ती है । इस समस्या को लेकर ही व्यंग्य शैली में लेखिका ने अपने विरोधी भाव को प्रकट किया है । लेखिका ने कहीं-कहीं पर भाषा में मुहावरों, कहावतों, संवादों का उपयोग किया है । लेखिका की भाषा पाठकों के मन पर प्रभाव डालने वाली है । लेखिका के प्रसिद्धि न पाने और प्रसिद्धि पाने के लिए उन्हें साहित्य के क्षेत्र में क्या-क्या संघर्ष करना पड़ता है उसका उल्लेख किया गया है । यह रचना साहित्यिक समस्या के अंतर्गत आती है ।

इस प्रकार ये सारी व्यंग्य रचनाएँ साहित्यिक व्यंग्य रचनाओं के अंतर्गत आती हैं । इन व्यंग्य रचनाओं में लेखिका ने साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों को व्यंग्य शैली के माध्यम से व्यक्त करते हुए आक्रोश प्रकट किया है । इन

साहित्यिक रचनाओं में लेखिका ने लेखकों की समस्याओं, संपादन, साहित्यिक समितियों की समस्या, पुरस्कारों से जुड़ी समस्या, साहित्यिक यात्राओं की समस्या, प्रसिद्धि पाने की समस्या, साहित्यिक क्षेत्र से लेखकों का एक-दूसरे के प्रति विरोधाभास, वयोवृद्ध लेखकों की मनःस्थिति, साहित्यिक क्षेत्र में घटते मूल्य आदि विसंगतियों को सूर्यबाला ने अपने साहित्यिक व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से साहित्यिक क्षेत्र में हो रही धांधली का मुक्त रूप से विरोध करते हुए करारा प्रहार किया है । यह प्रहार कभी-कभी हास्य भी निर्मित करता है तो कभी-कभी दिल को कचोटता भी है । मगर एक व्यंग्यकार के रूप में अपनी व्यंग्य रचना के माध्यम से अपनी मंशा पाठकों तक पहुँचाने में सूर्यबाला सफल रही हैं । भाषा भी प्रभावशाली है । यथार्थ के आधार पर व्यंग्यो की रचना की है । व्यंग्यों में वाक्यों का प्रवाह एवं दृश्य इतने अधिक स्पर्शित करते हैं कि एक दृष्टांत हमारे सामने उपस्थित हो जाता है । उनकी व्यंग्य-रचनाओं में विवरण एवं वर्णन का बंधन नहीं है । अंग्रेजी शब्दावली का भी प्रयोग बखूबी किया गया है । कहावतें, मुहावरे, समस्याओं को सीधे-सीधे कह डाला है । रितते मूल्यों पर भी ध्यान दिया गया है । सूर्यबाला ने सुगठित व्यंग्य रचनाओं की रचना की है । संवाद शैली का उपयोग एवं कहीं-कहीं पर पात्रों को भी बीच-बीच में निर्मित कर दिया है ।

इस प्रकार सूर्यबाला ने साहित्यिक व्यंग्य रचनाओं को अपनी कुशल व्यंग्य शैली के माध्यम से सफल व्यंग्यों को रचा है जो उन्हें एक अव्वल दर्जे की व्यंग्यकार के रूप में साहित्य जगत में स्थापित करते हैं । जो उनके स्थान को साहित्य के क्षेत्र में एक उच्च पद की ओर अग्रसर करता है ।

5.12 सामाजिक विसंगतियों पर आधारित व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन

व्यंग्य हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है । कड़वी से कड़वी बात व्यंग्य में कही जा सकती है । रोजमर्रा के कार्यों में अधिकांश संवाद, बात, व्यंग्य से प्रभावित होती है । इसमें पारिवारिक एवं सामाजिक रुढ़ियों पर कटाक्ष भी

होता है। अपने किसी जाने-पहचाने सामाजिक विरोधी के कार्य व्यवहार पर ऐसा व्यंग्यपूर्ण कटाक्ष क्षण भर के लिए भला लग सकता है और हम अपने मन में यह खयाल ला सकते हैं कि वाह! क्या बात कही हमने! वर्तमान समय में जीवन में व्यंग्य अहम भूमिका निभा रहा है । कुछ हास्य व्यंग्य केवल हास्य के लिए न होकर उसमें सामाजिक विसंगतियों को भी कुतरा जाता है । समाज में विसंगतियाँ, विद्रुपताएँ होंगी तो अवश्य ही उस पर प्रहार करनेक लिए व्यंग्य जन्म लेगा । सामाजिक विसंगतियों पर आधारित व्यंग्यों में सामाजिक अव्यवस्थाएँ, कानून, पुलिस, प्रशासन, महँगाई, बेरोजगारी आदि के कारण समाज में विसंगतियाँ तीव्र गति से बढ़ती जा रही हैं । इसके केन्द्र में व्यक्ति विशेष न होकर समाज इसका निशाना होता है । सूर्यबाला ने बड़ी निर्ममता से सामाजिक विद्रुपताओं की बखिया उधेड़ कर रख दी हैं । इसी वजह से समाज में स्थित विसंगतियों को सूर्यबाला ने विद्रोहात्मक स्वर में निरंतर प्रहार किया है जो पाठक वर्ग के जेहन में कहीं न कहीं प्रश्न पैदा करता है, जिस पर पाठक मनन करता है । सूर्यबाला के सामाजिक विसंगतियों पर आधारित व्यंग्य जर्जर समाज को फिर से खड़ा करने में अपना सहयोग प्रदान करते हैं ।

यहाँ पर हम सूर्यबाला की सामाजिक व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन करने का प्रयत्न करेंगे ।

5.12.1 रचनात्मक आयामों से बचते बचते:

प्रस्तुत व्यंग्य रचना में लेखिका कहती हैं कि आजकल के अखबारों में ताज़ा खबरों के नाम पर केवल भ्रष्टाचार, यौनाचार और पता नहीं और कितने दुराचारों का उल्लेख मिलता है जो मानव मन की शांति भंग कर देते हैं । उसका उसके स्वयं के समाज में ही तिरस्कार होता है ऐसा लगता है । अखबारों में ऐसी खबरों की रोज होड़ लगी होती है और इन अखबारों की जबान सुखती नहीं है । और कहा जा रहा है कि सारा देश ही रसातल में जा रहा है और आपको साहित्य

की पड़ी है । सूर्यबाला ने व्यंग्य करते हुए लिखा है- "सारी दुनिया में त्राही-त्राहि मची है, हत्या, आतंकवाद, दुर्घटना, बलात्कार, सारी विघटनकारी शक्तियाँ सक्रिय हो गई हैं ।"[15]

सूर्यबाला कहती हैं- "सोये हुए साहित्य को जगाइए रघुनाथ-कुँवर की तर्ज पर"[16]। साहित्य में पढ़ा जा रहा था, समझने-समझाने की कोशिश भी जारी थी, बस शोरगुल नहीं हो रहा था । साहित्य के हाशिए में चले जाने के बाद सूर्यबाला ने विशेष व्यंग्य करके उसका व्यंग्यात्मक शैली में वर्णन किया है । सूर्यबाला ने इस व्यंग्य रचना में सामाजिक विद्रुपताओं, विसंगतियो जैसे भ्रष्टाचार की समस्या, यौनाचार, आतंकवाद, बलात्कार की समस्याओं पर करारा प्रहार किया है । ये सारी विसंगतियाँ हमारे समाज को अंदर से खोखला बना रही हैं । भाषा शैली के आधार पर देखें तो इसमें संवादात्मक शैली, समकालीन परिदृश्य को भी ध्यान में रखा गया है । भाषा पूरी तरह प्रभावात्मक है जो पाठकों को विचारणीय कर देती है । साहित्य की विसंगतियों का भी थोड़ा परिचय मिलता है । अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है । यह रचना पूर्णतः व्यंग्य के तत्त्वों के नियमों का पालन करती है। इसमें विसंगतियाँ, भाषा सुधार आदि मौजुद हैं ।

5.12.2 बड़े बाबू, बिलॉक साहब बनाम तैयारी महबूब के आने कीः

हमारे देश में सरकार के अंतर्गत अनेक संस्थाओं का समावेश होता है और वर्ष में एक बार इन संस्थाओं का सरकारी बाबूओं द्वारा उसकी गुणवत्ता, स्थिति, कार्यकाल का इंस्पेक्शन होता है और इसी बात को सूर्यबाला ने व्यंग्य करते हुए ऐसी ही संस्थाओं में फैले भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करते हुए इस व्यंग्य रचना का निर्माण किया है । हर संस्था में एक ऐसा बाबू होता है जो अपनी संस्था में भ्रष्टाचार करके उसकी नींव को खोखला कर देता है । बड़े बाबू को कोई नहीं हटा सकता है । इस बड़े बाबू का इस संस्था में इतना दबदबा, पावर होता है कि जाँच-समिति का ख्याल रखने का सारा जिम्मा बड़े बाबू का होता है और इस

समिति के सदस्यों को खुश करने के लिए बड़े बाबू चिकन मक्खनी और रसमलाई का ऑर्डर आने से पहले ही दिलवा देते हैं । जो भी फर्जीवाड़ा होता है उसमें "बड़े बाबू ने दो जीप, वाउचर क्विंटल के क्विंटल रुई, दवाईयों, औजारों, बुग, कंबल, गद्दे, तंबु, तकिए के फर्जी बील, दवाईयों का आखरी स्टॉक भी तुरंत का तुरंत ब्लैक कर दिया जाता है ।"[17] यहाँ सूर्यबाला ने हमारे देश के स्वास्थ्य विभागों में हो रहे कालाबाजारी, भ्रष्टाचार का अपनी व्यंग्यात्मक शैली में विरोध किया है । इस व्यंग्य रचना की भाषा संगीतात्मक है। दोहों का भी जिक्र मिलता है।

इस रचना के माध्यम से लेखिका कहना चाहती हैं कि मनुष्य न केवल स्वयं भ्रष्टाचार करता है बल्कि अपनी आनेवाली पीढ़ी में भी इसका बीजारोपण करता जाता है ।

5.12.3 रिटायरनामा:

'रिटायरनामा' व्यंग्य रचना में भ्रष्टाचार जैसी समस्या को आंशिक मात्रा में दर्शाया गया है । रिटायर होने के बाद कैसे व्यक्ति का व्यक्तित्व परिवर्तित होता है इस पर बात की गई है । रिटायर की शाम को वह व्यक्ति अपने घर में ऐसे दाखिल होता है जैसे वह मैदाने जंग या चुनाव जीतकर आया हो। ऐसे उसके गले में फूलों की मालाएँ लदी होती हैं। सोफे पर बैठकर यह घोषणा की जाती है कि अब परिवार को अपना पूर्ण समय दिया जाएगा । सब साथ में खाएँगे-पीएँगे घुमेंगे-घामेंगे, मजे उठाएँगे । (हिन्दी फिल्मी गाने 'खंडाला' की तर्ज पर)। लेखिका सोचती है कि इतनी जल्दी क्या थी रिटायर होने की? बड़ी मुश्किल से दफ्तरबाजी की होगी । हर चीज की घर में दफ्तर जाते समय मांग की जाती थी। लेखिका को यह सूचना दी जाती है कि अब कुछ काम नहीं करना पड़ेगा । बस, सारी व्यंजन-विधियाँ काम में लाकर खाना बनाया जा सकता है । कहा जाता है कि अच्छे भोजन का सुस्वाद देकर वह अपने सारे अरमान पूरे कर सकती हैं । आस-पास

के फोन-कॉल्स अब लेखिका स्वयं हैंडल कर सकती हैं। इस व्यंग्य रचना में व्यक्ति के रिटायर होने के बाद की शेष जीवन की यात्रा को व्यंग्य के माध्यम से दृष्टिगत करवाया जाता है । भाषा में व्यंग्यात्मक शैली, संवादात्मक शैली एवं वर्णनात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है । पारिवारिक विसंगतियों का यहाँ उल्लेख मिलता है । सूर्यबाला ने पारिवारिक संबंधों एवं रिटायर होने के बाद की परिस्थितियों को उजागर किया है ।

5.12.4 कॉलोनी में कुत्ताः

लेखिका कहती हैं पिछले तीस वर्षों से लिख रही हैं परंतु कमाल है कि साहित्य का कुत्ता भी उनके घर के आसपास फटका हो । "यदि साहित्य समाज का दर्पण है तो साहित्यकारों के जीने की शर्त या तीर्थ भी हैं तो कुत्ते कहाँ नहीं होते?"[18] क्योंकि लेखिका के पति उनकी चौकस पहरेदारी करते हैं लेकिन जब शाम को टहलने जाते हैं तब शानदार कुत्ता लेखिका को नज़र आ ही जाता है । अपने करीब के रुबी टावर वालों को नीचा दिखाने के लिए अब उनके टॉवर में भी कुत्ते आ गए हैं और "फाटक पर लिखा जाता है 'कुत्ते से सावधान' वाली चन्द्रहार-सी झुलती तख्ती राहगीरों को रश्क से देखने और दुबककर निकल जाने को मजबूर कर देती है ।"[19] कुत्ता पालन अब एक स्टेटस हो गया है । लेखिका कहती हैं कि अब वह अपने पति से भी एक कुत्ता लाने के लिए कह देंगी । अब मनुष्य मनुष्य का साथ छोड़कर कुत्तों का साथ ढूँढ़ता है । और कुत्तों का साथ पाकर मनुष्य अपने आपको धन्य, गौरवान्वित, आनंदित महसूस करता है । कुत्ते के माध्यम से लेखिका ने कहा है कि कुत्ते के गुण अब मनुष्य में भी शामिल हो गये हैं । लेखिका यह कहना चाहती हैं कि कुत्ते की ही तरह अब मानव भी गुर्राना, दुम हिलाना, झुठ-फरेब, भौंकते रहने की प्रवृत्ति में लग गया है । इस व्यंग्य में मनुष्य एक कुत्ते के गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करके व्यंग्य किया गया है ।

भाषा में लय, संगीत, भजन, व्यंग्य आदि का समावेश किया गया है । प्रभावशाली भाषा के कारण व्यंग्य पाठकों के मन पर सीधे चोट करता है ।

5.12.5 भारतीय रेल का फलित :

युं तो भारतीय रेल दुनिया का चौथा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है, लेकिन सुरक्षा एवं सुविधाओं के मामले में वह अन्य मुल्कों से काफी पीछे है । ट्रेनों में सुरक्षा का अभाव है । आए दिन ट्रेनों मं लूट-पाट की घटनाएँ सुनने को मिलती हैं। ट्रेनों की लेटलतीफी सामान्य बात हो गई है । कई बार तो रेल्वे स्टेशन पर पहुँचने के बाद ट्रेन रद्द कर दी जाती है जिससे यात्रियों के समय एवं धन की हानि होती है । भारतीय रेल्वे स्टेशनों की हालत, लगातार उसमें आती तकनीकी दिक्कतें, यात्रियों की लंबी-लंबी कतारें, टिकट न मिलने की परेशानी, लगभग हर यात्री परेशान रहता है । रेल्वे का बढ़ता किराया, आम जनता को होनेवाली समस्या आदि रेल्वे के नकारात्मक पहलु हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं । इसी को लेकर सूर्यबाला ने व्यंग्य कसा है । लेखिका कहती हैं "मान लिजिए, आप बनारस से मुम्बई जा रहे हो या कहीं से कहीं जा रहे हो, भारतीय रेल्वे की एक गाड़ी के विशेष डिब्बे में बैठने पर उम्मीद है कि आप एक न एक दिन अपनी मंजिल तक पहुँच जाएंगे ।"[20] पर गाड़ी ग्यारह मील दूर जंगल, पहाड़ी, लता, द्रुमों के बीच पुलिया पर खड़ी है क्योंकि अभी इंजन बदला जायेगा और आगे पटरी बन रही है। यह गाड़ी अपनी मंजिल पर पहुँचने से पहले ही रुक गई है । और सब गाड़ी का इंतजार कर रहे हैं । कर्मचारी भी रेल्वे का सही अराइवल या डिपार्चर समय सही नहीं बताते । लेखिका व्यंग्य करते हुए कहती हैं "अभी आजमा कर देखिए!" यहाँ ज्योतिषशास्त्र का भी ज्ञान बताया गया है । लेखिका ने भारतीय रेल्वे की दुर्दशा का यथार्थ चित्रण किया है । वर्णनात्मक शैली में व्यंग्य का उपयोग करके रचना को रोचक बनाने का प्रयत्न किया है । भारत की रेल व्यवस्था का बिना डरे निडर भाव से विरोध दर्ज किया है । और सही में देखा जाए तो लेखिका ने भारतीय रेल

व्यवस्था की दुखती रग पर हाथ रख दिया हो ऐसा लगता है । भाषा शैली ऐसी है कि दृश्यात्मक चित्र हमारे सामने प्रस्तुत हो जाता है ।

5.12.6 जन आकांक्षा का टाइटल साँग :

सूर्यबाला ने इस व्यंग्य रचना में देश में मौजूद कई सामाजिक विसंगतियों को समेट लिया है और उन पर यथार्थ रूप से व्यंग्य शैली में अपना आक्रोश प्रकट किया है ।

देश के कर्णधार देश के लिए बहुत कुछ कर चुके । "ये सूखा, बाढ़, दंगे, दुर्घटनाओं में मरे खपे लोगों को मुआवजा बाँट चुके थे ।"[21] आतंकवाद के खिलाफ भी बोल चुके थे । देश के नाम संदेश भी जारी करके प्रसारित कर दिया था । अब कर्णधार खुद (नेता) आम जनता के बीच जाकर कुछ कार्य करना चाहते हैं, सेवानिवृत्त लोग, बेरोजगार आदि को सभाओं में बुलाया गया है । सबका कुशलक्षेम पास बैठाकर पूछा जाए । 'अब कैसा महसूस करते हैं, प्यास महसूस करते हैं, स्वतंत्रता के बाद कोई फर्क नहीं पड़ा क्या? स्वतंत्र होकर भी भूखे मर रहे हो, अब तो तुम स्वतंत्र हो'[22] अब हम गर्व से भूखा मर सकते हैं । कितनी बार समझाया गया है कि कहो 'सब खुशहाल है, सारा देश मालामाल है।' बेरोजगारी की समस्या, भूखमरी, गरीबी की समस्या पर व्यंग्य किया है लेखिका ने । भ्रष्टाचार, घोटाले, स्कैंडलों की समस्याओं पर भी व्यंग्य किया है । भाषा शैली वर्णनात्मक है तथा हास्य उत्पन्न करने वाली है। परस्पर वाक्यों में विरोध नज़र आता है जो पाठक में एक उत्सुकता पैदा करता है । बड़े ही सहज भाव से सारी समस्याओं पर करारा प्रहार किया है जो पाठक के अंतरमन पर गहरा प्रभाव डालता है । व्यंग्य के सारे तत्त्व इस रचना में समाहित हैं । अंग्रेजी शब्दों का भी उपयोग किया है । अपनी बात (विरोध) को रखने में लेखिका ने सफलता प्राप्त की है ।

5.12.7 पापी पपीता रे :

इस व्यंग्य रचना में लेखिका ने प्रकृति के साथ इश्क लड़ाने की बात की है। एक पपीते पर सारे घर का ध्यान केन्द्रित होता है । शेष संसार का स्वाद, कोई सार नज़र नहीं आता। घुमना-फिरना सब बंद हो गया है । कुल मिलाकर दिन का और दिल का चैन हवा हो गया है ।

लेखिका के बगीचे में कचनार, नरगीस, वैजयंती है लेकिन सिर्फ "पपीते के सिवाय दुनिया में रखा क्या है?"[23] रहीम की सतसई के दोहे का भी उल्लेख है । लेखिका को डर है कि गरीबी और भुखमरी से परेशान होकर कोई उनका पपीता चुरा न ले जाए । भूखमरी का निदान ढूँढ़ने में कोई पपीते ना उठा ले जाए । पति को भी आधी रात को पपीते की सुरक्षा में जगाती है । लेखिका रोज पपीतों की गणना करके रखती है ताकि कोई चोरी न कर ले । आखिर में गरीबी रेखा के लाइनवाले लड़के दबे पाँव लंबे बाँस का हँसिया बाँधकर लगभग सारे पपीते गिराकर ले जा चुके थे और लेखिका यूँ की यूँ लूटी-पिटी किचन गार्डन में पहुँची । सब कुछ शेष हो चुका था । वो देख रही थी ।

संवाद शैली : वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है । भूखमरी, गरीबी, चोरी, लूटपाट जैसी समस्याओं पर इस व्यंग्य रचना के माध्यम से अपना रोष प्रकट किया है । पपीता तो केवल बहाना था ।

भाषा शैली : भाषा में लयबद्धता है । दोहे, अंग्रेजी शब्दं का भी उपयोग किया है । इस रचना का उद्देश्य समस्याओं पर प्रकाश डालना है ।

5.12.8 मन चंगा तो कठौती में गंगा :

सूर्यबाला द्वारा रचित व्यंग्य रचना 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' यह एक हिंदी की कहावत है । यह भाषा में उलटबाँसी किस्म की कहावत है । इसको सीधी तरह से भी देखा जा सकता था । 'जिसका कठौती में गंगा उसका मन चंगा' ऐसा भी कहा जा सकता था । यहाँ मन के विषय में लेखिका ने बात की है ।

मनुष्य का मन लोभी, लंपट, पाखंडी होता है । सारी रात चैन से सोता नहीं । यह भारती गौरवशाली परंपरा का प्रतीक है । चौबीस घण्टे काम करता रहता है ।

सारे साधु संत मन रूपी जहाज में सीखों, नसीहतों की थोक लॉडींग ही करते आए हैं औऱ सीखाते हैं कि मन शांत रहेगा तो बस ज़िंदगी कट जाएगी । मन शांत रहेगा तो रुखी-सुखी में भी पुलाव, बुद्धिमानी का स्वाद आएगा । गंगा में कुछ भी मशक्कत नहीं करनी पड़ती । गंगा स्वयं अपनी कठौतियों के सामने सामने से बेताब हो जाती है कि "अरे! आप काहे को तकलीफ करोगे, मैं खुद आ जाती हूँ न घाट-घाट का पानी लेकर ।"[24] गंगा के नीर में हर घाट का पानी एड करवाया जाएगा और ज़िनत अमान से उसकी फ्रेशनेस के राज़ के रूप में प्रदूषण मुक्त गंगा वॉटर को बताया जाएगा ।

इस व्यंग्य रचना में हमारी भारतीय संस्कृति की धरोहर एवं पूजनीय नीर वाली गंगा नदी के प्रदूषण को लेकर प्रश्नचिह्न खड़ा किया है । एक कहावत के माध्यम से पूरी व्यंग्य रचना का भावपक्ष सामने रख दिया है । व्यंग्यात्मक, संवादात्मक शैली एवं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया है ।

अथ कलियुग गुरुदेव रासो :

प्रस्तुत व्यंग्य रचना में सूर्यबाला ने 'काला अक्षर भैंस बराबर' गुरु-शिष्य परंपरा का मार्मिक सांगोपांप विवेचन प्रस्तुत किया है ।

इस व्यंग्य रचना में कबीर से लेकर पृथ्वीराज रासो तक के साहित्य की चर्चा की गई है । आज के वर्तमान समय में गुरु को कोई नहीं पूछता, फिल्मों में भी कोई गुरु हिट नहीं है । लेखिका कहती हैं कि "मैं केवल, 'गुरुत्वाकर्षण परिवर्ती स्वरूप और दुर्दशा' शीर्षक से शोधग्रंथ लिखकर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त करुँगी ।"[25] अपने पीएच.डी. के समय के प्रसंगों का व्यंग्यात्मक वर्णन करके उसे पाठकों तक पहुँचाया है । शोध-छात्र एवं गुरु के बीच में कैसे संबंधों का ताना-बाना होता है उस संबंध में लेखिका ने व्यंग्य प्रस्तुत किया है । गुरु-

शिष्य परंपरा का अर्थ और स्वरूप अपनी व्यंग्य शैली में प्रस्तुत करने में सूर्यबाला को सफलता प्राप्त हुई है ।

सूर्यबाला ने इतिहास में गुरु-शिष्य परंपरा को आज के संदर्भ में जोड़कर तुलनात्मक शैली में व्यंग्य को प्रस्तुत किया है । गुरु के महत्त्व को आज की पीढ़ी ना समझती न मानती है । दोहे का भी उल्लेख है । कबीर, पृथ्वीराज जैसे महान व्यक्तित्वों का भी परिचय करवाया है । बेरोजगारी की समस्या को भी इस व्यंग्य रचना में आंशिक रूप से बताया गया है । सूर्यबाला की यह व्यंग्य रचना गुरु-शिष्य परंपरा को ध्यान में रखते हुए लिखी गई है । प्रसंगों का भी उल्लेख दृश्यात्मक स्वरूप में किया है।

5.12.9 चौरस्ते पर संवाद :

'चौरस्ते पर संवाद' में दो राहगीर अपने जीवन में आनेवाली समस्याओं के विषय में चौरस्ते पर चर्चा करते हैं और गाँव की परिस्थिति और गाँव में आई बाढ़ की स्थिति का उल्लेख करते हैं । इस व्यंग्य रचना में सूर्यबाला न बेरोजगारी जैसी वैश्विक समस्या पर दृष्टि की है । फिर गाँव का मुआयना कई बार हेलिकॉप्टर से किया जाता है अर्थात् बेरोजगारी की समस्या को पूरा करने के लिए सरकार काफी प्रयत्न करती है । परंतु बाद में सिर्फ बोलकर वादे करके ही परिस्थिति का जायजा लेती है । बाढ़ और सूखाग्रस्त इलाकों में मदद के लिए नेता लोग भी बहुत देर से पहुँचते हैं और बाढ़ग्रस्त लोगों को खाने में बासी खीचड़ी, लापसी खिलाकर बहुत से लोगों को मरणासन्न कर देते हैं । लोगों के मरने के आंकड़ों का भी खेल खेला जाता है । फिर दोनों राहगीर तीसरी दिशा अर्थात शहर की राह पकड़ते हैं, परंतु शहरों में भी दंगे मचे हैं । जब वे चौथी दिशा में मुड़ते हैं तब रोजी-रोटी पाने के लिए जाते हैं तब वहाँ पर भी सुख-शांति और सामान्य जन-जीवन बरकरार रखने के लिए कर्फ्यु लगा दिया जाता है । फिर तीनों पुलिस के डर से गाँव में रहते थे उसी परिस्थिति में वापस लौटकर आ जाते हैं । सूर्यबाला ने बेरोजगारी,

भूखमरी, बाढ़ की समस्या, शहरों में दंगों की समस्या आदि का विरोध व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से कर आक्रोश प्रकट किया है । संगीतात्मक शैली का प्रयोग किया है । "हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा..." आदि पंक्तियों का उल्लेख किया है । सूर्यबाला ने देश की लगभग सभी विसंगतियों को अपनी इस व्यंग्य रचना में समेट लिया है । इस व्यंग्य रचना में संवादात्मक शैली का उपयोग किया गया है । दो पात्रों के द्वारा समस्याओं को उजागर किया गया है ।

एक अभूतपूर्व डिमांस्ट्रेशन-खाना ईंट का :

इस व्यंग्य रचना में खाने के बदले ईंट खाने को कहा गया है जो प्रथम तो व्यंग्य के शीर्षक से समझ में नहीं आता । परंतु जैसे-जैसे पाठक व्यंग्य का अध्ययन करता है उसे इसका ज्ञान हो जाता है ।

शहर के स्पोर्ट्स क्लब के सेक्रेटरी का परिचय देते हुए कह रहे हैं कि आज जो महानुभाव आपके सामने बैठे हैं वो केवल-केवल ईंट खाते हैं और अब इन महाशय पर मेधावी छात्र शोधकार्य करने के लिए अमेरिका जा रहे हैं । फिर उन्होंने मेज पर रखी ईंट खाई और सारे उन्हे टुकर-टुकर देखने लगे । देश के कोने-कोने से डिमांस्ट्रेशन के लिए बुलाया था । वो कहते हैं कि उन्हें खाने के लिए कुछ नहीं मिला इसलिए ईंट खाते हैं । तभी उनसे पूछा जाता है कि 'सब लोग अनाज खाते हैं, तो आप क्यों नहीं?' क्योंकि ईंट खाने वाला व्यक्ति अपने आपको देशभक्त बताता है और जनता के सामने अपने त्याग एवं बलिदान का आदर्श रखता है ।

वह शख्स पतनी को भी खाना न बनाने को कहता है । ईंट खाकर ही रहेंगे। भोजन करना प्रारंभ करेंगे तो बीवी का काम बढ़ जाएगा । उसे रोज भोजन बनाना पड़ेगा । किराये से रहता है इसलिए वह मकान मालिक को भी ईंट खाने की धमकी दे सकते हैं । "परेशान मत कर नहीं तो घर की ईंट खा जाऊँगा ।"

यहाँ लेखिका ने व्यंग्य के माध्यम से महँगाई की समस्या पर व्यंग्य किया है और इस वजह से ईंट खानेवाले पात्र का निर्माण किया है । इस व्यंग्य रचना में बेरोजगारी, महँगाई, आवास की समस्याओं को उनकी विद्रुपताओं को उजागर किया है । संवादात्मक शैली, पात्रों आदि का ध्यान रखा गया है । समाज के रितते मूल्यों का भी परिचय करवाया गया है । कहावतों, मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है।

बडे बेआबरू होकर कला-वीथी से हम निकले:

इस व्यंग्य रचना में सूर्यबाला कला संबंधित ज्ञान की बात करती हैं । "काश! ईश्वर उन्हें कला विषय का ज्ञान देता" ऐसा व्यंग्य करती है। वह कहती हैं कि भगवान द्वारा बनाई गई कला सिर में समा जाती है परंतु आदमी द्वारा बनाई गई कला क्यों नहीं आती ।

जब एक चित्रकार की चित्रकला प्रदर्शनी में लेखिका जाती है तब वह उस कलाकार की कलाकृतियों को समझने में असफल रहती है । तो अपने आप से संवाद करते हुए कहती है ''कला के घर को खाला का हार समझ बैठी । वही कोफ्त कुढ़न और शर्मिंदगी !''[26] लगता था कि सूर्यबाला ने एक चित्रकार का दिल दुखा दिया था । उस चित्रकार ने महानगरीय प्रदूषण से जोड़कर चित्र बनाया था और सोचता था कि औरत से अच्छा माध्यम और क्या मिलता! इस व्यंग्य में एक चित्रकार अपने चित्र औरत को केन्द्र स्थान में रखकर बनाता है और समाज की कई समस्याओं को इन चित्रों के माध्यम से समझाना चाहता है । लेकिन इस कला को समझना हर किसी के बस की बात नहीं है । इस बात को गहराई में जाकर समझें । इस व्यंग्य रचना में संवादात्मक, शायरात्मक, व्यंग्य शैली का उपयोग किया गया है । अंग्रेजी एवं संस्कृत भाषा का भी उपयोग हुआ है ।

तत्वों की दृष्टि से देखा जाए तो सूर्यबाला की यह व्यंग्य रचना सारे तत्वों को समाहित करती है ।

सामाजिक व्यंग्य रचनाओं के अंतर्गत लेखिका ने संपूर्ण समाज की विद्रुपताओं, विसंगतियों, विडंबनाओं का उल्लेख व्यंग्य के माध्यम से किया है । समाज में रिश्वतखोरी, बेईमानी, सूखा, बाढ़, गरीबी, शिक्षा का अभाव, दंगों की समस्या, महानगरीय आवास की समस्या, मूल्यों का विघटन आदि को केन्द्र स्थान पर रखकर लेखिका ने सामाजिक व्यंग्य रचनाओं में समाज की विसंगतियों को यथार्थ स्वरूप में उजागर किया है ।

5.13 राजनीतिक व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन :

तत्कालीन कई व्यंग्यकारों ने विभिन्न नेताओं को, देश में स्थित राजनीतिक विसंगतियों, समस्याओं, विद्रुपताओ को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है । राजनीतिक व्यंग्य में सरलता से लेखक अपना उद्देश्य पूरा कर सकता है क्योंकि देश की जनता को पहले से ही राजनीति में रस रहता है । राजनीति में रही विसंगतियों पर चोट करता है एक व्यंग्यकार । उसी प्रकार से सूर्यबाला ने एक उत्तम व्यंग्यकार की तरह राजनीतिक व्यंग्यों में जनता को पढ़कर आनंद आये, हास्य निर्मित हो ऐसे व्यंग्यों को स्थान दिया है । क्योंकि देश की जनता राजनीतिक विसंगतियों के चलते कई समस्याओं को झेलती है। राजनीति मनुष्य के जीवन का अतूट सत्य है । समाज का हर वर्ग राजनीति को पसंद करता है । प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आज की राजनीति में कुनीति, कपट, छल, स्केंडल, घोटाले आदि मौजुद हैं । भारतीय राजनीति का इतना बुरा हाल है कि इसमें अमानवीयता की सीमा पर कर देते हैं । सूर्यबाला ने इन व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से नेताओं की वास्तविक तस्वीर जनता के सामने प्रस्तुत करते हुए नेताओं को उघाड़ दिया है । नेताओं के द्वारा गरीबों का शोषण, उन पर अत्याचार होता है। झूठी सांत्वना देते हैं । गरीब जनता की प्राथमिक आवश्यकताओं को भी पूर्ण नहीं कर पाते ।

आइए, हम सूर्यबाला द्वारा रचित राजनीतिक व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन करने का प्रयास करेंगे ।

5.13.1 यह देश और सोनिया गाँधीः

यह रचना एक राजनीतिक व्यंग्य रचना के अंतर्गत आती है । इस व्यंग्य के माध्यम से सूर्यबाला ने हमारे देश की राजनीतिक विसंगतियों, विडम्बनाओं का उल्लेख किया है । देश की सभी समस्याओं के लिए सबसे पहले कोई भी निर्णय लेने से पूर्व देश का बड़े-से बड़ा नेता पहले सोनिया गाँधी से मिलने जाता है । उनसे चर्चा-विचारणा करने के पश्चात् ही अपना निर्णय लेता है ।

उनके पति द्वारा उन्हें बताय गया कि सबसे ज्यादा देश में सोनिया गाँधी व्यस्त हैं । उन्हें साँस लेने तक की फुर्सत नहीं है । जो नेता जरा भी खुश होगा और उत्साह में दिखे समझ लेना वह सोनिया गाँधी से मिलकर आया हुआ है । सब बारी-बारी से सोनिया गाँधी से मिलने जाते हैं। अध्यक्ष भी अध्यक्ष पद पर आरोहण करने से पूर्व सोनिया गाँधी से मिलने जाता है, आशीर्वाद लेता है । किसी को मंत्री पद छोड़ने के बाद सुचित करने और कौन-सी वाली छोड़ और कौन-सी वाली जाऊँ, राय लेने के लिए भी सोनिया गाँधी के पास ही जाना पड़ता है ।

इस व्यंग्य रचना के माध्यम से राजनीतिक दलों के अध्यक्षों, नेताओं, सामान्य कार्यकर्ताओं आदि के लिए राजनीति में उच्च पद प्राप्त किए हुए नेताओं का कितना महत्त्व होता है इसको दर्शाते हुए व्यंग्य किया है । संवादात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, हास्य निर्मित करने वाली वाक्य रचना का उपयोग किया है तथा राजनीति की समस्याओं को आम पाठकों के सामने उजागर किया है ।

5.13.2 देशसेवा के तालमेल :

यहाँ राजनैतिक समस्याओं पर व्यंग्य किया गया है । राजनेताओं को केसै एक पार्टी से दूसरी पार्टी बदलते देखा जा सकता है । वह कोई जनता की भलाई

के लिए ऐसा नहीं करते । वह तो खुद अपनी रोटियाँ सेंकने के लिए ऐसा करते हैं और कहते हैं कि वह देश के लिए कुछ करना चाहते हैं । जब पूछा जाता है कि इस देश में जन्मा, शादी-ब्याह किया, बाल-बच्चे पैदा किए और इसी देश में घोटाले में फँसा कैद झेलकर भी बाइज्ज़त बरी हो गया । वह न तो खुदकुशी करेगा ना ही आत्मदाह । वह तो केल देश पर मर मिटना चाहते हैं । आत्मदाह या खुदकुशी केवल गरीब करते हैं । वो तो सिर्फ देश के लिए मर मिटना चाहते हैं। और वह देश के लिए क्या-क्या करना चाहते हैं? वह तो पार्टी के मैनिफेस्टो में लिखा ही होता है, गरीब जनता मेनिफेस्टो का मुख्य आधार है । अशिक्षा, बेकारी, बीमारी, भूख, प्यास सब बाद में आते हैं । उनकी पार्टी विरोधी पार्टी की भी कड़वी सच्चाई सामने लाएगी और उसको बेनकाब करेगी । जो पार्टी नेताजी छोड़कर आए हैं वो तो चाटुकारों की पार्टी थी । इनकी पार्टी में तो आम जनता के लिए इतने काम करवाए जाएंगे जैसे दफ़्तर में टिफिन का डिब्बा उपलब्ध करवाना, मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना, जेब खर्च, पेंशन की भी व्यवस्था करवाई जाएगी । इस व्यंग्य रचना में राजनीतिक समस्याओं को उजागर किया है। सूर्यबाला ने इस व्यंग्य रचना में लालची, चाटुकार और अपनी रोटियाँ सेंकनेवाले नेताओं पर अपना आक्रोश प्रकट किया है । संवादात्म, शैली, अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है । समस्याओं में गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा, बेकारी जैसी विसंगतियों को बड़े ही प्रभावात्मक रूप से लेखिका ने इस रचना में उतारा है जो पाठकों को सीधे मन पर चोट करते हैं ।

5.13.3 भगवान ने कहा था :

'भगवान ने कहा था' व्यंग्य रचना में नेताजी के आगमन की सूचना मिलते ही उस क्षेत्र के मंदिर के भगवान के भी दिन बदल जाते हैं । जिसके कारण सूर्यबाला ने इस व्यंग्य के माध्यम से यह समझाने की कोशिश की है कि नेताओं के आगे तो भगवान का पद भी छोटा लगता है । क्योंकि प्रदेश के

नवनियुक्त सचिव महोदय भगवान के दर्शनार्थ आये थे । उनके आने की खबर से पूर्व ही मंदिर का परिसर पूरी तरह साफ़-सुथरा कर दिया गया था। मंदिर का कुड़ा-कचरा हटाया गया था । अगल-बगल की धूल उड़ाई गयी थी । मक्खी-मच्छर विहीन किया गया था । गड्ढों में डीडीटी छिड़का जा रहा था । मंदिर में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा था । भगवान को भी चमकाया गया था । प्रांगण को फिनाइल से धोकर स्वच्छ कर दिया गया था। सचिव ने इस मंदिर के दर्शन की इच्छा जाहिर की थी बस इसका ही नतीजा था कि मंदिर की साज-सज्जा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा था । सचिव महोदय विलंब से आये तो आरती की जो परंपरा सात बजे की थी वह टाल दी गई थी। भगवान को भी सचिव महोदय का इंजरार करवाया गया । आजकल पढ़े-लिखे सुशिक्षित लोग मंदिर में आते कहाँ हैं? जब भी देखो बेपढ़े, उज्जड़, गँवार और मनौतियों की पोटलियाँ और लोटे भर-भर प्रदुषित नदियों का पानी लिये धक्कामुक्की करते चले आते हैं । क्योंकि जितना अधिक प्रचलित मंदिर होगा चढ़ावा भी उतना ही ज्यादा आयेगा । भगवान भी आम नागरिक की तरह महासचिव से शिकायत करते हैं । उनका सोने का कलश टूट गया है । प्रस्तुत व्यंग्य रचना में सूर्यबाला ने नेताओं के लिए प्रजा में फैले भ्रम, उनके फुहड़ तरीकों का भी सम्मान करना तथा राजनेताओं के सामने भगवान की भी कोई मिसाद नहीं है यह बताया गया है । इस व्यंग्य रचना में वर्णनात्मक शैली, संवादात्मक कथन, कहावतों का व अंग्रेजी भाषा का भी उपयोग हुआ है । इस व्यंग्य का मुख्य उद्देश्य नेताओं की अपनी मनमानी करने की समस्या को उजागर किया है ।

5.134 समस्या मुख्यमंत्री की:

प्रस्तुत व्यंग्य में सूर्यबाला ने भारतीय चुनाव व्यवस्था पर कटाक्ष किया है । भारत एक ऐसा देश है जहाँ कभी-भी किसी भी समय चुनाव का आयोजन हो सकता है । चुनाव की समस्या सदैव बनी ही रहती है । यहाँ भारत में कई पार्टियाँ

हैं जो हमेशा एक-दूसरे को नीचा दिखाने, एक दूसरे पर कीचड़ उछालने में और अपनी रोटियाँ सेंकने आदि को ही केन्द्र स्थान में रखती हैं । जनता के प्रश्नों का तो कोई सवाल ही नहीं है । बस पार्टी का काम निकलना चाहिए । यहाँ हर कोई अपने आप को राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में देखता है । और इसी होड़ में लगा रहता है कि जो भी उससे बन पड़ेगा वह मुख्यमंत्री बनने के लिए काम करेगा । क्योंकि वह तो क्या कोई भी राज्य का मुख्यमंत्री बनने के लिए तैयार हो जाता है । चारों ओर 'मैं' का शोर बढ़ जाता है ।[27] लेखिका कहती है कि ''यहाँ तो मुख्यमंत्री की कुर्सी न हुई, मधुमक्खियों का छत्ता हो गया । फर्क है तो सिर्फ इतना कि मधुमक्खियाँ शहद मनाती हैं, भरती हैं छत्ते में और प्रत्याशी मात्र निचोड़ते हैं।...''[28] प्रस्तुत व्यंग्य में संवादात्मक शैली का प्रयोग हुआ है । वाक्य रचना भी प्रभावित करने वाली है । व्यंग्य शैली भी पाठक के मन को प्रभावित करती है । रचना कभी-कभी हास्यात्मक भी लगती है क्योंकि व्यंग्य ही ऐसी भाषा में किया गया है जिससे पाठक की हँसी निकल जाए । राजनीति की समस्या को यहाँ पर उजागर किया गया है ।

5.13.5 देश सेवा के अखाड़े मेः

'देश सेवा के अखाड़े में' लेखिका ने देश की समस्याओं पर प्रहार किया है जैसे गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा आदि ।

चुनाव में खड़े रहने के ऐलान मात्र से सब लोग पूछने के लिए आ जाते हैं और बंगले की बात करने लगते हैं क्योंकि पेवेलियन में कुछ महीने ही गुजरे हैं दोनों बेटों को । ढाँको और स्टेशनों के लिए जगह कम पड़ रही है । देश की सेवा में अपना योगदान प्रदान करने वाले के लिए भोजन तो अत्यंत संतुलित और नियमित होता है । राजनीति में इतना स्कोप है कि जो लोग नकम रोटी खाते थे वे फल, दूध एवं सूखे मेवों वाले मेनु पर स्थानांतरित हो आज तक स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं ।

देश सेवा के नाम पर मेवों की बात हो रही है । मेवा तो इस क्षेत्र में हर कोई खाता है और पैसे नहीं जायेंगे । सब वसूल कर लिये जायेंगे । इनका लिबास भी शुभ, स्वच्छ बकुल पंखी अर्थात् बगुले की तरह सफ़ेद, शफ्फाक़! हर मौके पर दुरस्त,[29] संतरी भी विज़िटींग कार्ड देता है और कहता है कि उसके अलावा कोई संतरी ना हो पाएगा । क्योंकि यह बड़े जोखिम का काम है । इस व्यंग्यात्मक रचना में राजनीति में स्थित विसंगतियों को लेखिका ने उजागर किया है । यहाँ पर केवल वोट एवं नोट की ही बात होती है पर राजनिति में आकर सबसे पहले जो राजनीति में उनसे विद्रोह करना नहीं उनका भरोसा तोड़ना नहीं । साथ मिल-जुलकर काम करना । प्रस्तुत व्यंग्य की भाषा प्रभावात्मक है । वर्णनात्मक शैली के साथ संवादात्मक शैली का उपयोग किया है । वाक्य रचना में भी व्यंग्य झलकता है। कहावतों, मुहावरों और उलटभाषी भाषा का प्रयोग किया गया है । कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है । यह रचना राजनीतिक समस्या से जुड़ी है ।

अतः राजनीति मनुष्य के अस्तित्व की अटल सच्चाई है । चाहे समाज राजनीति को पसंद करे या नापसंद करे, परंतु प्रत्येक व्यक्ति राजनीति से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ा हुआ है । राजनीति का अर्थ होता है 'नीति' से राज करना। परंतु आज के युग में कहाँ नीति से काम होता है? शासकीय व्यवस्था को सफलतापूर्वक चलाने के लिए कुशल नेता, कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है। और उनके मन में प्रथम भाव देश के लोगों की सेवा का होना चाहिए । परंतु राजनीति में केवल अपने तक ही भाव को सीमित रखते हैं । जनता की समस्याओं को सुलझाने के बजाय स्वयं की सात पुश्तें एशोआराम से जीवन व्यतीत करें इतना धन-वैभव अर्जित कर लेते हैं । राजनीति में सेवा के नाम पर केवल 'मेवा' ही उपलब्ध करने की भावना नेताओं में रह गई है । इन्हीं विसंगतियों को सूर्यबाला ने अपनी राजनैतिक व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है । भाषा की बात करें तो भाषा में व्यंग्य के बाण ही चलाए गए

हैं । मनोरंजन करने वाली एवं हास्य निर्मित करने वाली भाषा है । शीर्षक भी बड़े सोच-समझकर प्रदान किये गये हैं। संप्रेषणीय व्यंग्य रचनाओं को पाठकों तक पहुँचाया है । सुगठित व्यंग्य रचना है । व्यंग्य में एक नयापन है । कहावतें, मुहावरे, संगीत, दोहे, फिल्मी गीतों, पात्रों, कथात्मक, वर्णनात्मक शैली का बड़े ही बाखूबी से उपयोग किया है । सभी व्यंग्य रचनाएँ व्यंग्य के तत्वों पर आधारित हैं । संवाद भी दिल को चोट पहुँचाने वाले हैं ।

5.14 नारी पर आधारित व्यंग्य रचना

स्त्री-विमर्श भारतीय समाज और साहित्य में उभरे सबसे महत्त्वपूर्ण विमर्शों में एक अलग ही स्थान रखता है, स्त्री-जीवन, स्त्री मुक्ति, स्त्री का संघर्ष, पुरुष प्रधान समाज में उसका स्थान दर्शाता है । व्यंग्य-साहित्य में आज स्त्री संवेदना और स्त्री जीवन की त्रासदी, स्त्री विमर्श इसमें व्यंग्य को स्थान दिया है । स्त्री विमर्श में एक नारी की प्रताड़ना, उसका तिरस्कार, उसको हमेशा नीचले दर्जे का समझना, उसकी भावनाओं के साथ खेलना । परंतु इक्क्सवीं सदी तक आते-आते व्यंग्य साहित्य में स्त्री की भावना, उसका विद्रोह, उसके आक्रोश के रूप में दिखाने का प्रयत्न व्यंग्य साहित्य करता है । आज की स्त्री पढ़-लिखकर समाज में अपना एक अलग स्थान निर्मित करती है । नारी की इन्हीं संवेदनाओं, विसंगतियों का सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से विरोध प्रकट किया है ।

आइए, हम सूर्यबाला द्वारा लिखित नारी पर आधारित व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन करने का प्रयास करेंगे ।

5.14.1 महिला दिवस और फ्रेन्च टोस्ट :

इस व्यंग्य में महिला दिन की बात हो रही है । इस दिन महिलाओं का ही दिन होता है । इस दिन पुरुषों का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए ऐसा लेखिका कहती है ।

यहाँ पर लेखिका महिला ने दिन के लिए समाज में किस प्रकार अलग-अलग तैयारियाँ की जाती हैं उसका व्यंग्यात्मक शैली में चित्रण किया है । केवल महिला दिन को केन्द्र स्थान में रखकर सड़कों पर महिलाओं के बैनर लगा दिये जाते हैं, महिलाओं से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है । महिलाओं की खुबसुरती पर बहस छेड़ी जाती है ।

सूर्यबाला 'महिला दिन' मनाए जाने के संदर्भ में अपनी प्रतिक्रिया देती है। स्त्री जाति के प्रति आपका यह पूज्यभाव देखकर मैं श्रद्धावनत हूँ।[30] अगर समाज में महिलाओं के प्रति का व्यवहार, दृष्टि बदल जाए तो महिला दिन मनाने की जरुरत ही नहीं आयेगी । इसका मतलब तो यही हुआ कि आज के आधुनिक युग में भी महिलाओं की स्थिति, उन पर हो रहे अन्याय, अत्याचार में कोई विशेष कमी नहीं आई है । महिला दिन का पुरुष भी जमकर फायदा उठाता है उस दिन को स्पेश्यल बनाने के लिए वह भी प्रयास करता रहता है ताकि वह सभ्य समाज में गिना जा सके । महिला दिन के नाम पर बहाना बनाकर पति भी जल्दी घर आ जाते हैं फिर भी उस दिन महिलाओं की न तो भावनाओं की कदर होती है न ही उनकी अवस्था में कोई बदलाव आता है । पात्रों के रूप में चंदा मलगाली, निक्की, नयना, श्रीवास्तव, सक्सेना आदि का उल्लेख मिलता है । पात्र अंग्रेजी भाषा का उपयोग करते हैं। संस्कृत भाषा को भी कहीं-कहीं स्थान दिया गया है । श्लोक भी देखने को मिलते हैं । 'देहि देवी' । वाक्य-रचना भी सुलभ है । भाषा संवादात्मक शैली में है । शब्दों का भी उचित प्रयोग किया गया है । स्त्री की संवेदनाओं से समाज कैसे खेलता है तथा महत्त्व देने के चक्कर में अपना ही स्वार्थ साधा जाता है। केवल नाम के लिए महिला दिन मनाने का क्या फायदा जब तक आप समाज में स्थित लोगों की महिलाओं के प्रति उनकी दृष्टि को नहीं बदल सकते ।

सूर्यबाला की यह रचना सूर्यबाला के स्वयं के मनोभावों को प्रकट करती है ऐसा मुझे लगता है । इसी वजह से उन्होंने ऐसी व्यंग्य रचना का लेखन किया है ।

5.14.2 स्त्री उन्मुक्ति के उपलक्ष्य में:

लेखिका ने यहाँ पर स्त्री उन्मुक्ति के विषय में व्यंग्य किया है । जब से महिला की शादी होती है तब से उसके अन्याय, अत्याचार झेलने की शुरुआत हो जाती है । वह केवल मुकबधिर बनकर यातनाओं को झेलती रहती है । आज देखते ही देखते स्त्री के दीदावर पैदा हो गये हैं। अब एक ढूँढ़ो तो हजार मिलते हैं। कभी स्त्री को देखकर कभी दीदावर को देखकर दंग रह जाते हैं ।[31] जहाँ देखो वहाँ स्त्री सशक्तिकरण, स्त्री जागरुकता की ऐसी लहर चली है कि हर शहर, हर कस्बे, हर गली, हर कुचे, शहर में पर्व मनाये जाते हैं । यहाँ पर आधुनिकता के नाम पर स्त्रियों को केवल विज्ञापनों में गोरा बनाकर दिखाया जा रहा है । समर्थ स्त्री वह है जो बिकनी पहनकर सारी दुनिया में शांति और भाईचारे का संदेश पहुँचाये। जैसे-जैसे स्त्री समर्थ होती गई वैसे-वैसे वह बोल्ड होती गई। स्त्री सशक्तिकरण की नवीन परिभाषा के अनुसार "कम समर्थ स्त्रियाँ बोल्ड हुआ करती हैं, ज्यादा समर्थ स्त्रियाँ हॉट।" [32] फिल्मी दुनिया में इसी आधार पर स्त्री सशक्तिकरण को दर्शाया जाता है । इसी बात पर लेखिका ने व्यंग्य किया है । भाषा वर्णनात्मक स्वरूप में है । अंग्रेजी भाषा एवं प्रभावात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है । स्त्रियों की त्रासदी का वर्णन करके उसके प्रति अपना आक्रोश सूर्यबाला ने प्रकट किया है ।

5.14.3 सवाल जामचक्कों की दुरुस्ती का:

हर असफल महिला के पीछे किसी पुरुष का हाथ होता है इस बात का व्यंग्य किया है लेखिका ने । सिर्फ महिलाओं के प्रति अपने रवैये के सुधार की बात की है परंतु मामला टस का मस वहीं रहता है । भारतीय रेलवे के खजूर में अटके गाड़ी की तरह स्त्री-पुरुष को गाड़ी के दो पहिए माना है । परंतु एक पहिया चालु है । पिछला बेमरम्मती हाल में है । कई महिलाओं ने ये जिम्मा लिया है कि पुरुष को जगाकर ही छोड़ना है । एक स्त्री ने पुरुष को आगे बढ़ाने में

मदद की है उसका हर टास्क अपने हाथ में ले लिया है । होगा बिल्कुल उल्टा। पुरुष जागरण पक्ष की रैलियों का आयोजन करना पड़ेगा । पति के लिए तख्तियाँ बनाई जायेंगी कि पति एक सन्मानजनक व्यक्ति है । पतित्व हीनता नहीं गौरव का प्रतीक है । इस व्यंग्य रचना में महिला, परिवार में स्थिति, उसकी अन्याय सहने की बात पर व्यंग्य किया है । 'सवाल जामचक्कों की दुरुस्ती का ' में समाज में स्त्रियों की अवस्था को दर्शाते हुए व्यंग्य किया है । भाषा प्रभावात्मक है । संवादात्मक, व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है । कहावतों को उल्टा करके बताया गया है, जिससे चोट की जा सकती है । अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग देखा जा सकता है । इस व्यंग्य का उद्देश्य महिलाओं का समाज में एक स्थान सुनिश्चित करना है ।

5.14.4 स्त्री विमर्श का स्वर्णयुगः

स्त्री शोषण को लेकर यहाँ सूर्यबाला ने व्यंग्य किया है । नारी सदियों से अपने उपर हो रहे अत्याचार, उपेक्षा, शोषण की वस्तु रही है । स्त्रियाँ हमेशा उपभोग की वस्तु रही हैं । कन्यादान और राखी बाँधने वाली वस्तु रही हैं । स्त्रियों ने खुद अपनी दुर्दशा सुनी तो दो हत्थड़ मारकर रो पडी । लेखिका कहती हैं- सोचना क्या है, हमें नहीं करना । यह सब झंझट का काम है । कौन पड़े इन पचड़ों में ।[33]

आज के लोग स्त्री की समझदारी की उम्मीद नहीं करते । सदियों से स्त्री की तुमुल ध्वनि से स्त्री के इस सयानेपन का स्वागत किया है । उसकी दूरदर्शिता की दाद दी । स्त्री विमर्श का यह स्वर्णयुग है । स्त्री एक स्वर्णमृग है। अब स्त्री-सामर्थ्य का लक्ष्य-वेध बन गया है । स्त्रियाँ हर क्षेत्र में पुरुषों की बराबरी कर रही हैं । उसे अब लोगों ने वस्तु समझना बंद कर दिया है । अब सारा शो हमारी मर्जी का हो गया है । नये युग की ऊर्जावान स्त्री उद्योग, व्यवसाय, व्यापार के नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है । लेखिका कहती है कि हमने सोचा हमीं क्यों पीछे

रहें? हम भी अपने कारोबार के जरिए अपना नाम रोशन करना जानते हैं । प्रस्तुत व्यंग्य रचना में आज की आधुनिक स्त्रियों की समाज में जो स्थिति है उसे अपने व्यंग्य के निशाने पर लिया है । व्यंग्य की भाषा प्रभावात्मक है । अंग्रेजी भाषा, वाक्यों का उपयोग है । वर्णनात्मक शैली देखी जा सकती है । संवादों को भी जगह मिली है । व्यंग्यात्मक शैली का प्रभावी रूप से उपयोग किया है । इस रचना का उद्देश्य समाज में महिलाओं की स्थिति को उजागर करते हुए उनके जीवन की विसंगतियों को दर्शाना है ।

5.14.5 ससुराल स्त्री विमर्श :

ससुराल में जाने के बाद कैसे एक लड़की का जीवन परिवर्तित हो जाता है। वो नये घर जाकर नये-नये रिश्ते-नातों में बँध जाती है । जिसमें उसे जेठानी, देवर, ननद, सास-ससुर एवं पति को अपने वश में करना होता है । उनको खुश रखने के लिए वह अलग पैटर्न अपनाती है । उसका प्रथम दिन अपने ससुराल में जो इम्प्रैशन रहेगा वही उसके साथ पुरी जिंदगी चलेगा और वह पूरे घर पर राज करेगी ऐसा लेखिका का मानना है । उसे अपने घर पर यह सिखाया जाता है कि ससुराल जाकर उसे अपने पति को कैसे वश में रखना है । यह उसे कुट-कुट कर सिखाया जाता है । हिंदुस्तान की जनसंख्या का सही अंदाजा ससुराल में ही हो गया । कैसे ससुराल में ही उसको स्वयं की गतिविधियों को ध्यान में रखना पड़ता है । उसे अलग-अलग दौर से गुजरना पड़ता है । भाषा संगीतात्मक है। संवादशैली का प्रयोग किया है । पात्रों के माध्यम से व्यंग्य को सूर्यबाला एक नया मोड़ प्रदान करती है । इस रचना का उद्देश्य समाज में स्त्रियों पर हो रहे मानसिक अत्याचार को दूर करने की बात है क्योंकि एक लड़की को उसके बचपन से ही ससुराल में रहने की ट्रेनींग दी जाती है ऐसा लगता है ।

स्त्री विमर्श व्यंग्य रचनाओं में महिलाओं की समाज में हो रही दुर्दशा, दहेज प्रथा, भेदभाव, घर में ही उस पर हो रहे मानसिक दबाव, उसके जीवन के सारे

पहलुओं को समेटने का सूर्यबाला ने प्रयास किया है । एक स्त्री के जीवन में त्रासदी, पीड़ा के विरोध में अपना आक्रोश इन्हीं व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है । भाषा में सूर्यबाला ने बाजी मार ली है । व्यंग्यात्मक शैली के साथ-साथ संवाद शैली, कथात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, संगीतात्मक शैली, दोहे, कहावतें, उलटबाँसी, मुहावरे, संस्कृत भाषा के श्लोक, अंग्रेजी भाषा की शब्दावली, वाक्य रचना भी प्रभावात्मक है । उद्देश्य यह है कि स्त्रियों के जीवन की त्रासदी, पीड़ा, उत्पीड़न, अत्याचार, अन्याय, मानसिक अत्याचार आदि का व्यंग्यात्मक शैली में विरोध दर्शाया जाए। सूर्यबाला को अपनी इन स्त्री-विमर्श व्यंग्य रचनाओं में विशेष सफलता प्राप्त हुई है क्योंकि वह भी एक स्त्री है जो इन सारी भावनाओं को स्वयं झेलती हो या अनुभव करती हो इस तरह डुबकर प्रस्तुत करती है।

5.15 विदेश यात्राओं पर आधारित व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन :

सूर्यबाला ने अपने साहित्य जीवन में कई विदेशयात्राएँ की हैं जिसे भी उन्होंने अपने व्यंग्य के बाणों से वर्णित किया है । उसे भी सूर्यबाला ने नहीं बख्शा है । विदेश और भारत की संस्कृति, उसका लोकजीवन, रहन-सहन, सुख-सुविधाओं का सबका तुलनात्मक अध्ययन करते हुए व्यंग्य किया है ।

सूर्यबाला के विदेश प्रवासों पर आधारित व्यंग्य रचनाओं का मुल्यांकन करने का प्रयास करुँगी ।

5.15.1 वाया अमेरिका :

हमारे भारतवर्ष में निवास करने वाले लोगों को विदेशों में कोई देश अधिक पसंद आता है तो वो है अमेरिका क्योंकि अमेरिका पूरी दुनिया में विकसित देशों की श्रेणी में प्रथम क्रमांक पर आता है । अमेरिका जाना यहाँ के लोगों की प्रथम प्राथमिकता है, जो लोग अमेरिका जाते हैं वे दूसरों को अमेरिका के संदर्भ में बातें

बताते रहते हैं । और इसमें ही उनको परम आनंद की प्राप्ति होती है । शायद पूरी दुनिया में अमेरिका में ही वास्तविक सुख है । अमेरिका का नाम सुनते ही मन में लड्डू फूटने लगते हैं । यहाँ पर बसे लोगों को हिन्दुस्तान में बसने पर इतना गर्व नहीं होता जितना अमेरिका में निवास करके होता है । अंग्रेजी तो अंग्रेजी परंतु हिंदी भाषा का एक्सेंट भी अमेरिका जैसा बना दिया गया है । अमेरिका से आनेवाले लोग हिंदुस्तान में जब आते हैं तो वहाँ की सारी खूबियाँ बताते रहते हैं और बताते-बताते थकते भी नहीं और वहाँ की स्वच्छता, कारें, रास्ते, बर्गर, खाना, टैग, डिस्काउंट कुपन आदि की तारीफें करते रहते हैं । वहाँ के मौसम की भी जानकारी साथ में देते हैं ।

प्रस्तुत व्यंग्य रचना में सूर्यबाला ने भारत के लोगों का अमेरिका के प्रति जो मोह है उस पर कटाक्ष किया है और उसको आधार बनाकर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है । भाषाशैली की दृष्टि से यह एक उत्तम रचना है । तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कहीं-कहीं देखने को मिलता है । अपनी संस्कृति एवं देश से जुड़ने के लिए लोगों को प्रेरित करती है । संस्कृति, देश प्रेम की भावना को जागृत करने का प्रयत्न सूर्यबाला ने किया है । प्रभावात्मक शैली है। वर्णनात्मक, संवादात्मक शैली का प्रयोग भी देखा जा सकता है ।

5.15.2 जड़ों से जुड़ने का सवाल:

साहित्य, कला, शिक्षा के क्षेत्र में सभी दिग्गज, जानकार एक ही सलाह दे रहे हैं कि जड़ों से जुड़ो । कहीं कोई लेखिका जड़ों से संबंधित प्रश्न ना करे और इस सवाल का जवाब वो नहीं दे पायेगी तो बड़ी जगहँसाई हो जाएगी क्या इतने बड़े हिंदुस्तान में । किसी की जड़ें अमेरिका में हैं । सब टुरिस्ट विज़ा पर गये हैं । क्योंकि बच्चा पैदाइशी अमेरिकी हो गया है, जड़ें जो खो गईं । अब वह अमेरिका में सर्च मारेगी । मगर जड़ें मिलीं तो वापस हिंदुस्तान लेकर आऊंगी ऐसा लेखिका कहती है । अमेरिका के लेगों ने कहा भी कि क्या आप लोगों का कोई ठिकाना

नहीं । सबकुछ पास होते हुए भी तलाशते नहीं है । क्योंकि अब जड़ें हमारे पास रही ही नहीं हैं क्योंकि अब वह अमेरिका चली गई है । प्रस्तुत व्यंग्य में भारत के लोग अपनी जड़ों अर्थात् संस्कृति, सभ्यता के बजाय अमेरिका, पाश्चात्य संस्कृति का बड़ा आदर सम्मान करते हैं । परंतु वही सच्चा प्रेम अपनी संस्कृति को नहीं देते । उसकी जड़ें तक पीढ़ियों ने खो दी हैं । प्रस्तुत व्यंग्य में विदेशों में निवास करने वाले भारतीयों पर प्रहार किया है कि ऐसे लोग भारतीय संस्कृति पर गर्व न करके पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर अपने देश की तुलना वहाँ से करने लग जाते हैं तथा वहाँ का ही गुणगान करते हैं । अपनी व्यंग्यात्मक शैली के आधार पर सूर्यबाला ने उन पर धारदार चोट की है और अपने देश प्रेम, संस्कृति से लगाव का परिचय दिया है ।

5.15.3 प्रभुजी तुम डॉलर हम पानी :

इस व्यंग्य की खासियत दो सभ्यताओं को आमने-सामने लाने तक ही सीमित नहीं है । इन सभ्यताओं में नेपथ्य है । दोनों देशों की सभ्यता एवं संस्कृति में बहुत अंतर है । "फर्क रह गया है तो सिर्फ इतना कि वो डॉलर पाकर पागल हैं और हम डॉलर पाने के लिए ।" यह व्यंग्य दो तरह के पागलपन के बीच में जबरदस्त ताना मारता है । पाठक को दोहे की भी याद दिलाई जाती है - "कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय । इहि पाय बौराय जग, उहि खाए बौराए ।" अमेरिका की सभ्यता के आगे हमारी सभ्यता धतुरे की तरह है । भारतीय संस्कृति, संस्कारों के चरम मूल्य डॉलर के आगे पानी पानी है । अर्थात् उसकी कीमत कोई नहीं है । अमेरिका जैसे देश की सभ्यता और संस्कृति आज के सर्वोच्च सफल जीवन का एक परिचायक बन गया है । जैसे कोई भगवान ध्यान लगा रहो हो । जब कोई भारत लौटता है तब पुरा अमेरिकामय जीवन और उसके अहंकार में जीने लगता है । अमेरिका की जो डॉलर मुद्रा है इसी मुद्रा के आघे सारी दुनिया नतमस्तक हो जाती ह । सारा जीवन ही तकनीकी जीवन से भरपूर

एवं स्वर्ग का आनंद दनेवाला बन जाता है । यहाँ सोच एवं रंगीन जीवन भरपूर आनंद लेने की छुट्टी है । सूर्यबाला के लहजे में कहें तो इन दोनों के बीच सेतुबंध नहीं है । तकनीकी के उल्लास में आत्मा फड़फड़ाती है परंतु सभ्यता का स्थान सर्वोपरि है ।

इस व्यंग्य में काव्यों का प्रवाह एवं दृश्य इतने अधिक स्पर्शित करते हैं कि दृष्टांत हमारे सामने प्रस्तुत हो जाता है । इस व्यंग्य रचना का विवरण एवं वर्णन का बंधन नहीं है । व्यंग्य की रचना यथार्थ के आधार पर की गई है । दो सभ्यताओं का दृश्यात्मक दृष्टिकोण सूर्यबाला ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है । यह पूरी तरह से एक ही समस्या से जुड़ा हुआ व्यंग्य है । आर्थिक मानसिकता की पड़ने वाली मार है । यहाँ पर डॉलर उच्चता का प्रतीक है तो पानी शुद्रता का प्रतीक माना गया है । यह व्यंग्य परिहास जनित व्यंग्यता है । वक्रोक्ति की ढलान एवं कौशल है । सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य शैली के माध्यम से व्यंग्य के साथ पूर्ण न्याय किया है तथा अपनी संस्कृति से लोगों को जोड़ने का प्रयास किया है।

5.16 सूर्यबाला के बाल साहित्य का मूल्यांकन :

हिंदी बाल साहित्य कितना समृद्ध है! उसे जानने-पढ़ने का प्रयास हुआ ही नहीं है । हिंदी का बाल साहित्य भारत की सभी भाषाओं की तुलना में कहीं ज्यादा समृद्ध है । हिंदी बाल साहित्य में स्वतंत्रता के बाद लगभग सभी विधाओं में न केवल पर्याप्त और श्रेष्ठ बाल साहित्य लिखा गया । बल्कि बाल साहित्य लेखन की सार्थकता और अपने समय के बच्चों से उनके सम्बन्धों को लेकर बहसें भी हुई हैं । बच्चों के लिए कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास, नाटक कथाएँ सभी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं जो आज के बच्चों की रुचि एवं मनोविज्ञान के अनुरुप लिखी गई है । बाल साहित्य की सामग्री विशेष रूप से आज के बच्चों के लिए लिखी गई रचनाओं का मूल्यांकन करने और उन्हें एकत्र करने का आधार एवं साधन क्या है? आज का बाल साहित्यकार ही है जो अपनी सशक्त रचनाओं से बच्चों में नई

चेतना, नई स्फूर्ति ला सकता है तथा विषैले दुष्प्रयोगों के प्रति सावधान कर सकता है । बाल साहित्य का आधार बाल मनोविज्ञान है । बालक के विकास में बाल साहित्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण है । बाल साहित्य के अनेक उद्देश्य हैं इसमें एक तरह से बाल जीवन का मनोरंजक अध्ययन होता है । बालक में उत्सुकता, रचनात्मक प्रवृत्ति, उपार्जन प्रवृत्ति, आत्मदर्शन की प्रवृत्ति, द्वंद्व की प्रवृत्ति, विनय की प्रवृत्ति, स्पर्धा, सहानुभूति आदि प्रवृत्तियाँ प्रमुख होती हैं । बालकों की जिज्ञासा एवं कल्पना इतनी बलवती और विस्तृत होती है कि उनकी भावनाएँ मानव जीवन के हर पहलूओं को छुती हैं । बच्चों में हमेशा नया जानने की उत्सुकता बनी रहती है । फिर भी उनके लिए भावनात्मक रुप से सुरक्षा अधिक आवश्यक होती है । हिंदी में बाल साहित्य का बड़ा स्तोत्र पंचतंत्र की कथाएँ हैं, जो बच्चों को मनोरंजन के साथ साथ उनमें मूल्यों का रोपन, देशभक्ति, समानता की भावना, निश्चल मनोभाव आदि को दर्शाया जाता है ।

सूर्यबाला के बाल साहित्य में एक रचना है जिसका नाम 'झगड़ा निपटाकर दप्तर' है जिसमें सूर्यबाला ने बच्चों को केन्द्र स्थान में रखते हुए बालसुलभ रचनाओं का निर्माण किया है जो बच्चों को पढ़ते वक्त मनोरंजक लगती हैं । इसेक साथ ही सूर्यबाला ने अपनी बाल रचनाओं में बच्चों के स्वभाव, उनकी आदतें, माँ-बाप का स्वभाव तथा बच्चों में मूल्यारोपण कैसे किया जा सकता है उसको अपनी बाल सुलभ भाषा का प्रयोग किया है । 'झगड़ा निपटाकर दफ्तर' सूर्यबाला की एक मात्र बालकथाओं का संग्रह है जिसमें कुल तेरह बाल-वार्ताओं का समावेश किया गया है । जो पाठकों के साथ-साथ बच्चों को भी मनोरंजक लगती है । ऐसा लगता है बच्चों की यह सारी आदतें दृश्यात्मक रुप से हमारे सामने आ जाती हैं ।

बच्चे देश की धरोहर होते हैं । उनका लालन-पालन सब माँ-बाप के हाथ होता है । दूसरा होता है समाज, और उसके परिवार की अवस्था बहुत की बाल मानस पर असर करते हैं। इन तेरह वार्ताओं में बच्चों की कई समस्याओं को भी

छूकर सूर्यबाला लौट गई हैं । सूर्यबाला ने अपनी बालसुलभ रचनाओं से आज के बच्चा पार्टी को मूल्यों की शिक्षा प्रदान की है ।

आइए, हम सूर्यबाला द्वारा रचित बाल-वार्ताओं का मूल्यांकन करने का प्रयास करेंगे। सूर्यबाला का बाल वार्ता संग्रह 'झगड़ा निपटाकर दफ़्तर' एक मात्र संग्रह है जिसका प्रकाशन विद्याविहार, ई दिल्ली ने किया है जिसका प्रथम संस्करण 2012 में हुआ था, जिसकी प्रथम बालवार्ता ही 'झगड़ा निपटाकर दफ़्तर' है।

5.16.1 झगड़ा निपटाकर दफ़्तर :

बच्चे हमारे देश का भविष्य हैं और आने वाला भविष्य उनके हाथ में ही है और उनको पढ़ने वाले बच्चों के लिए बाल साहित्य का निर्माण करना वह भी सारे मूल्यों, भावनाओं को ध्यान में रखते हुए यह किसी भी लेखक के लिए असाधारण काम है । इससे बच्चों के मानसपटल पर भविष्य के निर्माण के लिए बहुत फर्क पड़ता है । बालक अपने आसपास घटित हो रही घटनाओं, वस्तुओं, विषयों को जानने के लिए हमेशा उत्सुक एवं तत्पर रहते हैं । उनकी जिज्ञासा को मानसिक शक्ति प्रदान करना एवं सही दिशा देने का कार्य बाल साहित्य एवं बालकथाएँ ही करती हैं । सूर्यबाला द्वारा रचित रचना बालकों को केन्द्रस्थान पर रखकर ही लिखी गई है । झगड़ा निपटाकर दफ़्तर एक ऐसी वार्ता है जिसमें छोटे बच्चे आपस में शरारतों, झगड़ों आदि को करते हुए खेलते रहते हैं । खेल-खेल में कभी बातें ज्यादा बढ़ भी जाती हैं। कभी-कभी माता-पिता से डाँट भी पड़ जाती है और कभी-कभी पिटाई भी हो जाती है । झगड़ा निपटाकर दफ़्तर के पात्रों के द्वारा सूर्यबाला ने बच्चों के बीच के संवादों को बड़े मनोरंजग एवं मोहक रूप से प्रस्तुत किया है । इसके पात्रों में गिटु, मंटु, बिलू द्वारा कहानी को नया आयाम दिया है । जब बच्चे रोज-रोज की एक जैसी प्रवृत्ति एवं जीवन शैली से ऊब जाते हैं, उनको अपने बचपन में थोड़े-थोड़े अंतराल पर कुछ नया करने, देखने, पाने का मन

करता रहता है और बच्चों का मन तो होता ही है कोमल. उन्हें लाँग जम्प मारना, छलाँगे मारना, अमरुद तोड़ना (कुछ चुराकर भागना) । लेकिन थोड़े दिनों के बाद बच्चे इससे भी ऊब जाते हैं । उन्हें कुछ दिलचस्प एवं मजेदार करना अच्छा लगता है । बच्चों ने बच्चों के बीच होने वाले झगड़ों को निपटाने के लिए एक ऑफिस खोल दी है जहाँ पर बच्चे दूसरे बच्चों की झगड़ों की समस्याओं का निपटारा करेंगे । इस वार्ता में लेखिका ने बच्चों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं पर भी आंशिक दृष्टि कर दी है जिसमें भ्रष्टाचार, लिंग भेद, लालाच, बच्चे कैसे बड़ों के गुस्से का शिकार होते हैं, आपस में मारपीट की समस्या, लड़कियों से जुड़ी समस्याओं पर भी प्रकाश किया है । यह वार्ता संवाद शैली के पात्रों के माध्यम से दर्शाइ गई है । बच्चों के लिए लिखी गई कहानी के संवाद छोटे हैं, मूल्य शिक्षा प्रदान करने वाली भाषा है। भाषा बनावटी व कठोर नहीं है । भाषा सरल एवं दिल में उतर जाने वाली है । जैसे सामान्य बच्चे आपस में बात करते हैं वैसे ही व्यवहारिक भाषा का प्रयोग किया गया है । अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया है । उदाहरणों, घटनाओं को बाल सुलभ बनाकर लिखा गया है; फिल्मी गीतों का भी उल्लेख है जैसे 'कुछ तो लोग कहेंगे...'[34] सूर्यबाला ने पूर्ण रुप से बच्चों की मानसिक अवस्था को समझते हुए इस रचना का निर्माण किया है ।

5.16.2 शामू जिंदाबाद:

हम अक्सर बच्चों को एक दूसरे की खींचाई करते हुए देखते हैं । बस इसी बाल मनोदशा का चित्रण सूर्यबाला ने अपनी इस रचना में किया है । बच्चे पाठशाला में, कक्षा में, घर पर खेलते-खेलते , अपने मित्रों, सहपाठियों को हमेशा चिढ़ाते हुए या मज़े लेते देखते होंगे । इसी एक रोचक, मनमोहक एवं मन को लुभाने वाली प्रवृत्ति को 'शामू जिंदाबाद' कहानी में पात्र मयंक एवं शामू के माध्यम से समझाने की कोशिश की है । कुछ बच्चे तो ऐसे भी होते हैं जो जैसे को तैसा जवाब भी दे देते हैं और कुछ अपनी समझदारी एवं सुझबुझ दिखाते हैं ।

इसमें शामू नाम का लड़का है जिसका स्वभाव, व्यवहार इतना अच्छा है कि वह सबको पसंद आ गया है । उसका पूरा नाम चिन्मय वर्मा था । शामू दिखने में मोटा, फेट-सा उसके ही नाम से जब मयंक को किसी ने वर्ग में सीकिया कहकर चिढ़ाया था तो उसे बहुत ही क्रोध आ गया था । उसने उसकी शिकायत रीना टीचर से कर दी थी । उसका यह व्यवहार पूरे वर्ग के लड़कों को पसंद नहीं आया था । उसके कहने से टीचर ने माधव को पनीश भी किया था । उस समय तो वह इस घटना से खुश हो गया था मगर कक्षा के लड़के उससे दूर-दूर रहने लगे थे । अतुल अस्थाना चिन्मय के कान में बोल रहा था कि बचकर रहना इससे, यह तो जरा-जरा सी बात पर शिक्षक से शिकायत लगा देता है । ऐसे चिढ़ने वाले लड़के से तो भगवान बचाए। उसने उसके बाद मन ही मन में माधव से सॉरी कहा था और 'शामू जिंदाबाद' का नारा भी लगाया था । बाल-सुलभ वार्ता में बच्चों के द्वारा उनमें होने वाले अलगाव, उनमें आए परिवर्तन, परिस्थिति को समझकर और आखिर में अपनी गलती का जो अनुभव होता है वह समझदारी दिखाई है । संवादात्मक शैली, बच्चों की ही सामान्य एवं सरल भाषा में वर्णन किया है । पात्रों को भी उचित रुप से उपयोग किया है । अंग्रेजी शब्दों का, विरोधी शब्दों का, दोस्ती की मिसाल की सीख दी गई है । इस वार्ता के माध्यम से बच्चों में सामाजिक मूल्यों का रोपन सूर्यबाला ने किया है । लगता ही नहीं है कि यह वार्ता बच्चों से अलग है । बच्चों के अंतरमन से संवाद निकालकर सूर्यबाला ने पाठकों के सामने प्रस्तुत किए हैं ।

5.16.3 ये जो मेरे पापा हैं :

सूर्यबाला ने इस बालवार्ता में बच्चों में जो अपशब्द बोलने की वृत्ति होती है उस समस्या को लेकर बच्चों को उनकी इस बेपरवाह आदत के लि सहज एवं सरल भाषा में मूल्य प्रदान किया है । सूर्यबाला कहती हैं कि जब बच्चे खेल में या घर में अपशब्दों का प्रयोग करते हैं तो बड़े लोग उन्हें डाँटते हैं और फटकारते हैं;

मगर बच्चों को उन्हीं की भाषा में उदाहरणों के माध्यम से समझाया जा सकता है जिससे अधिक लाभ मिलता है । कहानी के पात्र चिन्नु को उसके पापा डाँट-फटकार न लगाकर उन्होंने कहा- 'वो सड़क पार वाले मैदान में कितने बच्चे खेलते हैं उनके साथ खेलने जाया करो, घर में क्या करते हो?'[35] तब लड़का कहता है- "उन गंदे-गँवार बच्चों के साथ मुझे खेलने भेज रहे हैं?" मैं उनके साथ कैसे खेलूँगा, आप और मम्मी तो हमेशा मना करते हैं कि वे बच्चे खेल में घुसापट्टी, मारपीट कर बैठते हैं, बात-बात में गालियाँ देते हैं ।[36]

तब पापा ने चिन्नु को बड़ी सहजता से समझाते हुए कहा कि उनसे क्या कुछ कम हो तुम? तुम तो उनसे भी अधिक गंदी बातें करते हो। तुम तो गंदी गालियाँ भी देते हो। जब चिन्नु कहता है कि वह तो इंग्लिश की हैं तो वह कहते हैं कि कितनी अच्छी बात है, "आयम प्राउड ऑफ यू।"[37] गलत संगत में गलत आदतें सीखने की समस्या को कहानी में उजागर किया है । बच्चों को मार-पीटकर समझाने से अच्छा है उन्हें प्यार से, दुलार से उनकी गलतियों को बताकर उन्हें समझाया जाए। सूर्यबाला ने बालसुलभ भाषा का प्रयोग किया है । मूल्यों के संवर्धन को भी ध्यान में रखा गया है । संवाद शैली का प्रयोग किया है । वाक्य रचना भी बच्चों के अनुरुप ही है। वाक्य सरल एवं सहज हैं । अंग्रेजी शब्दों, वाक्यों का भी उपयोग किया गया है । बाल सुलभ संवादों के माध्यम से ही शिक्षा प्रदान करने का काम सूर्यबाला ने किया है । ऐसी रचना करने के लिए बाल मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है । बस उसी ज्ञान का परिचय सूर्यबाला ने कहानी में दिया है।

5.16.4 नाक पर गुस्सा :

'नाक पर गुस्सा' बाल वार्ता में सूर्यबाला ने बच्चों में रही हुई सहज गुस्सा करने वाली वृत्ति को बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है । यह गुस्सा करने वाला स्वभाव हमें हर सामान्य बच्चे में नज़र आता है । अपनी जिद और चीजों की माँग, या बात मनवाने के लिए आपने अक्सर बच्चों को बड़ों के सामने

अपना गुस्सा प्रकट करते हुए देखा होगा । क्योंकि छोटे बच्चे बड़ों या आसपास घटित होने वाली घटना / प्रसंगों का अच्छे से अनुकरण करने लगते हैं । और देखा जाए तो दुनिया के सारे बच्चे अपने परिवार के सदस्यों का अनुकरण करते देखे जा सकते हैं । खास करके बच्चे अपने माता-पिता का ही अधिक अनुकरण करते हैं । वो अपने बचपन में अपने पिता की ही दूसरी प्रतिकृति बनना चाहेत हैं। उन्हें ही देखकर उनका व्यवहार एवं आचरण देखकर ही वह सोचने-समझने की अवस्था में आते हैं । यहाँ पर सूर्यबाला ने बड़ों को यह नसीहत दी है - "लगता है कि बड़ों को हमेशा छोटे के सामने गलत व्यवहार करते हुए बचना चाहिए क्योंकि बच्चे अनुकरण तुरंत कर लेते हैं"। संवाद शैली में लिखी गई बाल सुलभ वार्ता है, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है । वाक्य रचना भी बच्चों के मन को प्रभावित करने वाली है । पात्र के रूप में चिन्नु और उसकी माँ है । सूर्यबाला ने चिन्नु और उसकी माँ के द्वारा बालकहानी में संवादों को समझाया । अंग्रेजी शब्दों में हॉस्पिटल, पेशन, फ्रेन्ड्स, इंफेक्शन, कहावत में टिट फॉर टेट का प्रयोग किया गया है । सूर्यबाला ने मूल्य शिक्षा ही इस बाल सुलभ कहानी से प्रदान की है ।

5.16.5 मम्मी की खुफियागीरी :

यह बालसुलभ कहानी वास्तविक जीवन से काफी हद तक समान लगती है । क्योंकि जब तक बच्चे छोटे होते हैं माँ-बाप उन्हें अपनी निगरानी में ही रखते हैं । परंतु जैसे-जैसे वो बड़ी कक्षा में जाते हैं माँ-बाप उन्हें थोड़ी आज़ादी दे देते हैं। लेकिन आज़ादी अधिक देने का भी बच्चों पर गलत प्रभाव पड़ता है । यही बात सूर्यबाला ने इस कहानी के माध्यम से माता-पिता को समझाना चाहती हैं । यहाँ टिन्नु के पात्र को माध्यम बनाकर इसके वास्तविक स्वरूप को सूर्यबाला हमारे सामने रखती हैं । टुन्नु भी जब छोटी कक्षा में पढ़ता था तब उसके बढ़िया मार्क्स आते थे परंतु जैसे ही उसे अपनी माँ से थोड़ी आज़ादी मिलती है वह लापरवाह और बेपरवाह बनकर दूसरे बच्चों की भाँति बिगड़ने लगा । जब चिन्नु

की माँ ने उसकी किताबों की जाँच की तो चिन्नु की किताबों की हालत बेहाल थी। इस घटना के बाद से ही टिन्नु की मम्मीने उसे रोज होमवर्क करवाने की प्रतिज्ञा ली । यही हाल आज के संदर्भ में सभी बच्चों के हैं यही बात सूर्यबाला इस कहानी के माध्यम से समझाना चाहती हैं । अगर माँ-बाप जरा भी अपनी जिम्मेदारी से चुकते हैं तो बच्चों पर इसका विपरीत परिणाम उसके संस्कारों में, पढ़ाई में या व्यवहार में हमें देखने को मिलता है । कहानी की भाषा बालसुलभ है । कहानी के संवाद छोटे हैं जो बच्चों के अनुरूप ही हैं । कहानी में वाक्यों का ज्ञानबोधक प्रयोग किया गया है । कहीं-कहीं वर्णनात्मक शैली भी दिखाई देती है । बालमानस का भी इसमें संपूर्ण ध्यान रखा गया है । अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग जैसे पिक्चरें, कार्टून, कॉमिक्स, मिस जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है । अन्य शब्दों मे काटा-कूटी, चाल-ढाल, खेलता-कूदता, चिढ़ा-चिढ़ा जैसे शब्दों को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

5.16.6 मेरा फ्लॉप शो :

इस कहानी में सूर्यबाला ने बच्चों में देशभक्ति का बीजारोपन करने का प्रयास किया है । बच्चों का मन कोमल होता है । वह किसी भी बात का, घटना या प्रसंग का जल्दी से अनुकरण करने लगते हैं और एक-दूसरे के देखा-देखी ही सीखते हैं । बच्चों में यह मनोवृत्ति होती है कि अगर वह किसी के पास कोई चीज़ देख लेते हैं तो उनको वैसी ही चीज़ पाने की या लेने की कामना मन में जागृत होती है । इसके लिए वे अपने माँ-बाप से जिद करने लगते हैं । सूर्यबाला इस कहानी से हर माँ-बाप से यह निवेदन करना चाहती हैं कि बच्चों की कोई भी चीज़ या जिद तुरंत पुरी मत कीजिए । उन्हें धैर्य, समझदारी जैसे मूल्यों से अवगत करवाएँ । समझा-बुझाकर उन्हें ऐसा ना करने को कहें और बच्चे तो होते ही हैं नाजुक कोमल हृदय, वे मान भी जाते हैं प्यार से । सूर्यबाला ने विदेश से आनेवाली चीजों का जिक्र किया है जिसके आने के बाद हमारे देश के लोग उन चीजों के

आदि हो जाते हैं । इस बालकहानी के माध्यम से एक वास्तविक बात सूर्यबाला ने हमारे सामने उजागर की है । वह कहती है हमें विदेशी चीजों का मोह नहीं रखना चाहिए । बच्चों के संदर्भ में हम यह कह सकते हैं कि कई माँ-बाप ऐसे होते हैं जो दूसरों के बच्चों के साथ अपने बच्चों का हमेशा कम्पेरिज़न करते रहते हैं । बच्चे हमेशा दूसरों का अनुकरण करके ही सीखते हैं । खास करके अपने माँ-बाप का। इसलिए माँ-बाप को अपने वाणी, व्यवहार, भाषा पर हमेशा नियंत्रण रखना चाहिए । कहानी में कविता का भी उल्लेख है जो अंग्रेजी है । अंग्रेजी शब्दं का प्रयोग है । कविता का स्टेन्ज़ा भी समाहित किया गया है । संवाद मनमोहक हैं । शब्दों का बालसुलभ उपयोग किया गया है । इस कहानी के माध्यम से देश प्रेम, लालच, जिद पर काबू पाना आदि मूल्यों पर अपनी दृष्टि लेखिका ने डाली है और लेखिका को इसमें सफलता भी प्राप्त हुई है । अंग्रेजी शब्दों में चॉकलेट, टेपरेकार्ड, इंपोर्टेड, फैशन जैसे शब्द दृष्टिगत होते हैं ।

5.16.7 लच्छु महाराज की जय:

टिन्नु अपने मित्र के घर जाता है । उसके घर पर वह अच्छा व्यवहार नहीं करता । वह घर पर आकर अपने मित्र जैसा ही व्यवहार अपने घर पर जो गरीब लड़का है उसके साथ करता है । यह असर वह बंटी के घर से आकर अपने घर पर दुर्व्यवहार में दिखाता है । वह अपने मित्र बंटी के घर की शानो-शौकत देखकर उसके जैसा अनुकरण अपने घर पर भी करना शुरु कर देता है । जैसे हमारे भारत में बसनेवाले लोग विदेशी चीजवस्तुओं को लेकर काफी बड़ाईयाँ मारते हैं पर अपने ही देश की वस्तुओं को बेकार समझते हैं । मगर टिन्नु की माँ उसे नैतिकता का, देशभक्ति का सबक सीखाती है और उसे समझाती भी है कि देश और उसके लोगों का क्या महत्त्व है । विदेशी चीजों से ज्यादा अधिक महत्त्व ये चीजें रखती हैं। लच्छु एक गरीब घर का लड़का है जिसकी पढ़ाई पर टिन्नु की माँ यहाँ अधिक जोर देती नज़र आती है । सूर्यबाला ने लच्छु के माध्यम से मजदूर

वर्ग की बात की है । सूर्यबाला ने सहजसरल भाषा का प्रयोग किया है । बाल भाषा का भी उपयोग भी सहज लगता है । कहानी में पारिवारिक वातावरण है । मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने वाली कहानी है । दोहे का भी उल्लेख है ।

दोहा : रुखी-सूखी खाइके ठंडा पानी पीव

देख पराई चपड़ी, मत ललचावे जी ।

मुहावरा भी दृष्टिगत है - 'लालच बुरी बलाय ।'[38]

5.16.8 रानो भाट की बहू :

इस कहानी में सूर्यबाला ने लोकपात्र रानो भाट, उसके सात बेटे, रानो भाट के निकम्मे आलसी बेटों का उल्लेख किया है । यहाँ पर सूर्यबाला ने रानो भाट की बहु की समझदारी, चतुराई, बुद्धिमानी को दर्शाया है । सूर्यबाला ने एक काल्पनिक कहानी के माध्यम से रानो भाट के सारे निकम्मे बेटों को मेहनती बनाया । उसका घर चाहे झोंपड़ी ही क्यों ना हो उसने उसे सजाया-सँवारा है । सूर्यबाला ने लोककथा के माध्यम से मेहनत-मजदूरी करना कभी भी बेकार नहीं जाता यह बात बच्चों को इस कहानी के माध्यम से समझाने की कोशिश की है । वह कहती है जीवन में हमेशा संतोषी जीवन जीना चाहिए । सूर्यबाला ने यहाँ साँप के उदाहरण के माध्यम से बताया कि एक मरा हुआ साँप भी बेकार नहीं गया । वह उसके छोटे बेटे की मेहनत का ही परिणाम था । जिसे चील के माध्यम से हीरे-मोती मिले । रानो की बहू ने अपनी सुझ-बुझ से लक्ष्मी जो चंचल होती है वह भी रानो भाट की बहू पर प्रसन्न हो जाती है और वही लक्ष्मी उसे पुश्ते-पुश्ते प्रसन्न रहने का वरदान देती है । बच्चों को ऐसी कहानियाँ अधिक पसंद आती हैं जो कल्पना के माध्यम से साहित्य में आती हैं । ऐसी कहानियाँ बच्चे अक्सर अपने दादी-दादा या नानी-नाना से ही सुनकर आनंद प्राप्त करते हैं और ऐसी कहानियों में हमेशा कोई न कोई मूल्य जरुर छिपा होता है । इस कहानी की भाषा सरल एवं सहज है, काल्पनिक पात्रों का निर्माण किया गया है । मेहनत का महत्त्व समझाया

गया है । राजा-रानी, महल आदि ऐतिहासिक पात्रों, वस्तुओं का उल्लेख देखने मिलता है । कहानी को उदाहरणों एवं बालसुलभ भाषा के माध्यम से सूर्यबाला ने कहानी को बच्चों के लिए लिखा है । छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग हुआ है, वर्णनात्मक एवं कथात्मक शैली का उपयोग किया गया है ।

5.16.9 खुराफातों की वर्कशॉप :

इस कहानी में सूर्यबाला ने बच्चों के द्वारा की जानेवाली शरारतों, खुराफातों पर विशेष ध्यान देकर बाल मनोविज्ञान को समझते हुए यह कहानी लिखी है । इस कहानी में सूर्यबाला ने तीन बहनों का उल्लेख किया है । तीनों बहनों में से बीचवाली सबसे अधिक खुराफाती एवं शरारतें मचाती है । वह सोचती है कि दोनों बहनों से उसके परिवार वाले अधिक प्रेम करते हैं । वह दो चक्कियों के बीच पीसनेवाली धान की तरह है । हर बात पर उसे डाँट खाने को मिलती है । उसको ही बड़ी बहन के काम बताए जाते हैं परंतु उसे अपनी बहनों को चिढ़ाने, मजा चखाने में हमेशा मजा आता है । भाषा की दृष्टि से कहानी प्रेरणादायक एवं शरारतों को भी प्यार से दर्शाती है । कहावतों का भी उल्लेख देखा जा सकता है । "दो चक्की के पाटों में पीसना", कहावत "शैतान की खाला", व्यंग्यात्मक भाषा का भी प्रयोग हुआ है । वर्णनात्मक, संवादात्मक दोनों भाषा शैलियों का प्रयोग हुआ है। इतिहास संबंधी भी जानकारी प्रदान की है । मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से यह कहानी रची गई है । अंग्रेजी को शब्दों का भी प्रयोग हुआ है - जैसे वर्कशॉप, फ्रॉक, मीटर आदि शब्दों का उल्लेख है । तीनों बहनों के बीच क संबंधों को बाल मानस को ध्यान में रखते हुए कहानी का निर्माण किया है । मूल्यों की शिक्षा देने का प्रयास किया है ।

5.16.10 लॉलीपॉपः

लॉलीपॉप यह एक बालनाटक है जिसमें नन्हें पात्रों के माध्यम से वार्ता को नया रूप प्रदान किया है । प्रस्तुत नाटक के माध्यम से सूर्यबाला ने बच्चों की सतर्कता, बुद्धिमता का परिचय करवाया है । छोटे बच्चे तो हमेशा शरारत करते रहते हैं, परंतु कभी-कभी यही छोटे बच्चे ऐसा काम कर जाते हैं जिससे समाज, परिवार एवं उनके माता-पिता को उनके किये काम पर गर्व महसूस होता है । लेखिका ने यहाँ बताया है कि हम सामान्य रुप से अपने घरों में छोटे बच्चों से हमेशा उन्हें डराने के लिए ऐसे बोलते हैं कि 'कोई तुझे पकड़कर ले जाएगा', या तो घर के बड़े उन्हें ऐसे किस्से या घटनाएँ बताते हैं कि आपको कोई पकड़कर ले जाएगा । ऐसा करने से उन्हें समाज में रह रहे खतरनाक लोगों का परिचय बच्चों को मिल जाए और बच्चों में इस वजह से जागृकता आए और बच्चे ऐसे लोगों से सतर्क हो जाएँ । नाटक के पात्र अजय और नरेन्द्र के माध्यम से हमें सीख दी है कि बच्चों को लड़ना सीखाएँ, उन्हें शिक्षा के साथ-साथ समाज का भी ज्ञान देना उतना ही आवश्यक है जितना शिक्षा प्राप्त करना । क्या उनके लिए अच्छा है और क्या उनके लिए बुरा है इसका फर्क उन्हें समझाना चाहिए । और इसी वजह से अजय की चतुराई और सतर्कता के कारण गिरोहों के सरदार को पकड़ने में मदद प्राप्त हुई जिसके कारण बहादुर बच्चों में उसका नाम शामिल हुआ है । हमारी भारत सरकार द्वारा हर साल ऐसे बहादुर बच्चों को उनकी बहादुरीभरे काम के लिए 26 जनवरी की परेड में स्थान दिया जाता है और उनकी बहादुरी के लिए अवार्ड प्रदान किया जाता है । ऐसे ही वो बच्चे होते हैं जो हमारे देश का नाम रोशन करते हैं । साथ में अपने परिवार के लिए भी गौरवभरा कार्य करते हैं । सूर्यबाला के द्वारा नाटक के जरिए समाजसेवा, बहादुरी, देश सेवा आदि मूल्यों का वहन किया गया है । जिसमें बाल मन के संवाद हैं, पात्रों को भी अच्छे से सूर्यबाला ने अपनी बात समझाने के लिए उपलब्ध करवाया । वाक्यरचना बाल भाषा के

अनुरुप है । सूर्यबाला की यह नाटकरुपी कहानी पढ़कर बच्चों में मनोरंजन के साथ साथ मूल्यों का रोपन भी सूर्यबाला ने किया है ।

5.16.11 हाय-हाय वे चुगलखोरियाँ :

इस कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने चुगली न करने की छोटे बच्चों को सीख दी है । क्योंकि छोटे बच्चों की यह हमेशा से आदत रहती है कि वे अपने मन की हर बात अपने माता या पिता को बताते हैं । और यह हर बात अपने माता-पिता को बताने की आदत कब चुगलखोरी में बदल जाती है पता ही नहीं चलता । शुरुआत में तो ऐसी बातें माता-पिता और बच्चों को अच्छी लगती है और इसका आनंद भी लिया जाता है । परंतु समय के साथ इस आदत का परिणाम अच्छा नहीं आता । बच्चों की इन आदतों को उनके माँ-बाप ही सुधार सकते हैं । माँ-बाप को चुगली एवं बातों में अंतर अपने बच्चों को समझाना चाहिए । सूर्यबाला ने चुगलखोरी के कई उदाहरणों के माध्यम से यहाँ सीख दी है जिसमें वह दादा-दादी वाला, बड़े भाई-बहनों वाला, छोटे चाचा वालु.. परंतु एक उदाहरण ऐसा भी सूर्यबाला ने प्रस्तुत किया है जिससे इस बुरी आदत से उन्होंने तौबा कर ली जो सबक उनके छोटे चाचा ने थर्मामीटर के माध्यम से समझाया है । जिसे चुगली के बदले कभी शाबाशी मिलती थी उसी चुगली से लड़की को तमाचा भी मिल जाता है । भाषा में कटाक्ष, मुहावरे, साधारण उपयुक्त शब्दों का प्रयोग, व्यंग्यात्मक भाषा जैसे 'होशियारी का सिक्का बिठाना' बाल सहज भाषा का प्रयोग, 'माया मिली ना राम', 'खिसीयानी बिल्ली खंभा नोचे' आदि कहावतों का प्रयोग किया है । मूल्यों का भी ध्यान रखा गया है । यह बाल साहित्य के स्वरुप में बंद बैठती है ।

5.16.12 मेहनती तोतेरामः

इस कहानी में एक तोते के माध्यम से दोस्ती की मिसाल सूर्यबाला ने खड़ी कर दी है । ऐसी कहानियाँ बच्चों को सुनाया करते थे दादा-दादी जिसके माध्यम

पशु-पक्षी या जानवर होते । इस कहानी में तोते का माध्यम लिया गया है । वह अपने साथ-साथ अपने मित्र के विषय में भी सोचते हैं । उसे एक काबुली चना मिला जिसकी दाल वह अपने मित्र को ले जाने की सोचता है । वह उस चने को दो फलों में करने के लिए बढ़ई के पास ले जाकर काम करवाने के लिए राजा को शिकायत करती है पर राजा भी उसकी बात नहीं मानता । फिर वह उस बढ़ई से काम करवाने के लिए साँप के पास जाती है पर साँप भी उसका काम करने से मना कर देता है, फिर साँप से काम करवाने के लिए वह लकड़ी के पास जाता है, वह भी उसकी बात नहीं सुनती । समुद्र उसकी व्यथा सुनकर उसकी सहायता करने को तैयार हो जाता है । फिर एक-एक करके सब उसकी बात मानते हैं । इस कहानी से सूर्यबाला यह सीख देना चाहती हैं कि हमें अपने जीवन में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए और हार मानकर कभी बैठ नहीं जाना चाहिए । अन्याय का डटकर सामाना करना चाहिए और तोता भी इस बात को समझता है । भाषा प्रेरणात्मक है । सरल एवं सहज भाषा का प्रयोग किया गया है । इसमें कविता की पंक्तियों का भी प्रयोग हुआ है । कविता के माध्यम से कहानी को समझाया है । भाषा में कहावतें, मुहावरे, पात्र और सारी भावनाओं को इस बालसुलभ कहानी में सूर्यबाला ने प्रस्तुत किया है ।

5.16.13 होली पर एक प्रतियोगिता मम्मियों की:

इस बालवार्ता में सूर्यबाला ने छोटे बच्चों के माध्यम से सभी को समानता के भाव से देखना चाहिए यह सीख दी है । बच्चों ने होली पर एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जसमें यह तय करना था की किसकी मम्मी सबसे अच्छी है । किसी की मम्मी का स्वभाव कोमल, प्रेमपूर्वक एवं बच्चों से प्रेम करने वाला है । इसमें शीला, मन्टु, मोना, रुपा, पारुल, चिंटु के माध्यम से इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह तय हुआ कि सब बच्चों में से जिसकी भी मम्मी यह प्रतियोगिता जीतेगी उसे ईनाम दिया जायेगा । इस वजह से सभी मम्मियों को जब

इस बात की आंशिक भी जानकारी हुई तो सभी की मम्मियों ने अपने व्यवहार में नम्रता, शालीनता दिखाई। बच्चों के प्रति सबकी मम्मियों का व्यवहार पहले के मुकाबले एकदम बदल गया । सबकी मम्मियों ने इसी बहाने सभी बच्चों को खूब खिलाया-पिलाया, मजा करवाया और होली के दिन सब बच्चों ने खूब हुडदंग मचाया । आखरी दिन सभी मम्मियों को विजेता बताते हुए दो-दो टॉफियाँ चुन्नु के द्वारा मम्मियों को बाँटी गई । किसी के साथ भी अन्याय नहीं होना चाहिए । यहाँ पर सूर्यबाला ने ममता को एक ही तराजू में तोला है । सबकी माँ सबके लिए एक विजेता ही होती है क्योंकि हर माँ अपने बच्चे को लेकर एक जैसा ही भाव रखती है । परंतु बच्चों ने अपने मनोरंजन के लिए इस प्रतियोगिता का आयोजन किया । इस बालकहानी में हास्य, मस्ती, मनोरंजन, प्रतियोगिता, समानता, सभी भावों को सूर्यबाला ने समेटा है । भाषा में वर्णनात्मक शैली के साथ संवादात्मक शैली का भी प्रयोग किया है । वाक्यों की रचना बालसुलभ है । बच्चों की मनोदशा को समझते हुए इसमें मातृत्व जैसे भाव को प्रकट किया है । मगर बच्चों में भी बड़ों जैसी ही समझदारी है । उन्होंने भी प्रतियोगिता में किसी की भी मम्मी को निराश नहीं किया । सभी मम्मियों का मनोरंजन ही किया । संवाद भी बालसुलभ हैं । अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है ।

5.16.14 निष्कर्ष :

सूर्यबाला ने बालसाहित्य का निर्माण करते समय बच्चों की मानसिकता के स्तर को ध्यान में रखा है । अपनी बाल कहानियों को उन्होंने रोचक, शिक्षाप्रद बनाया है । सूर्यबाला ने उचित विषय-वस्तु, व्यापक रुप और बच्चों की कल्पनाशील दुनिया की संपूर्ण सामग्री अपने बालसाहित्य 'झगड़ा निपटाकर दफ़्तर' में परोसा है । सूर्यबाला ने आत्म-सुधार के बदले बच्चों के मनोरंजन के लिए यह साहित्य डिज़ाइन किया है । सूर्यबाला के साहित्य की शृंखला बहुत बड़ी है । हर बाल वार्ता में कुछ न कुछ नया है । उनके बालसाहित्य में मूल्यों के साथ-साथ मनोरंजन भी साथ चलता है । हर बालवार्ता सकारात्मक विशेषताओं से भरी

हुई है । इनमें ध्यानपूर्वक चयनित परिचित शब्द, वाक्यांश शामिल हैं । बच्चे वार्ता का अर्थ समझे इसलिए सूर्यबाला ने इस कहानी संग्रह में बालचित्रों का भी मोहक उपयोग किया है । इस तरह की कहानियाँ छोटे बच्चों को बोलन और सुनने के लिए भी उत्साहित करती हैं । सूर्यबाला की ये कहानियाँ बच्चों के लिए अनुकूल हैं क्योंकि सूर्यबाला ने ऐसी कहानियाँ प्रस्तुत की हैं कि जिसे कम आयु के पाठक पहचान सकते हैं । इस प्रकार की कहानियाँ पढ़ने एवं सुनने वाले को संतुष्टि प्रदान करती हैं एवं उनकी साहित्य के प्रति दिलचस्पी बढ़ाती हैं । कुछ कहानियाँ भावनात्मक, कुछ मूल्यों के आधार पर, कुछ मनोरंजन करने वाली, कुछ ऐतिहासिक पात्रों को लेकर लिखी गईं । कहीं-कहीं पर दोहे, कविता, कहावतों, मुहावरों, अंग्रेजी भाषा के शब्दों एवं वाक्यों, संस्कृत के श्लोक, मंत्रों, बालभाषा का प्रयोग, उलटबासियों का उपयोग, इस बाल साहित्य की किताब में बच्चों के साहित्य के प्रति अपने ज्ञान का परिचय लेखिका ने दिया है । अच्छी गुणवत्ता वाली कहानियों का लेखन किया है । सूर्यबाला की बाल कहानियाँ मनोरंजग, उत्साहवर्धक व प्रेरणादायक हैं । रोजमर्रा के जीवन की कल्पना की दुनिया से मिलती-जुलती हैं, बच्चों की भावनाओं को समझने में पाठकों को मदद करती है। बच्चों की समस्याओं को उनके संदर्भों को सोचने के लिए हमें मदद करती हैं । उदाहरणों, चित्रों, संवादों, वाक्यों, प्रमुख घटनाओं आदि के सहारे कहानियों को और रोचक बनाया है । एक कहानी में नाटक भी दर्शाया गया है । सूर्यबाला के बालसाहित्य की रचनाओं में बाल साहित्य के उद्देश्यों को ध्यान में रखा गया है । आज के बालक कल के भारत के नागरिक हैं । वो जैसा पढ़ेंगे उसी के अनुरुप उनके चरित्र का भी निर्माण होगा । ऐसी कहानियों के माध्यम से हम बच्चों को शिक्षा प्रदान करके उनका चरित्र निर्माण कर सकते हैं । तभी तो ये बच्चे जीवन के संघर्षों से जूझ सकेंगे ।

**

पंचम अध्याय

संदर्भ सूची

1. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 23
2. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 94
3. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 95
4. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 95
5. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 101
6. भगवान ने कहा था, पृ. 41
7. भगवान ने कहा था, पृ. 42
8. भगवान ने कहा था, पृ. 30
9. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 138
10. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 138
11. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 116
12. भगवान ने कहा था, पृ. 49
13. भगवान ने कहा था, पृ. 50
14. भगवान ने कहा था, पृ. 51
15. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 87
16. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 89
17. धृतराष्ट्र टाइम्स, पृ. 19
18. भगवान ने कहा था, पृ. 120
19. भगवान ने कहा था, पृ.
20. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 112
21. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 145
22. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 145
23. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 49
24. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 54
25. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 56
26. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 25
27. धृतराष्ट्र टाइम्स, पृ. 102
28. धृतराष्ट्र टाइम्स, पृ. 102
29. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 33
30. धृतराष्ट्र टाइम्स, पृ. 110

31. भगवान ने कहा था, पृ. 35
32. भगवान ने कहा था, पृ. 37
33. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 109
34. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 8
35. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ.44
36. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 44
37. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 44
38. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 60